Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

ते धीरा बंधणुम्मुक्का,
णावकंखंति जीवियं।

जो कामभोगमय जीवन की आकांक्षा नहीं करते वे धीर पुरुष बंधन से मुक्त हो जाते हैं।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 50 • 19- 25 सितंबर, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 17-09-2022 • पेज : 16 • ₹ 10

अष्टमाचार्य कालूगणी की जन्मभूमि छापर में भव्य जैन भगवती दीक्षा समारोह

दीक्षा ग्रहण करना जीवन यात्रा का महत्त्वपूर्ण अवसर होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ६ अक्टूबर, २०२२

तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टमाचार्य कालूगणी की जन्मभूमि छापर में आयोजित द्वितीय दीक्षा समारोह में प्रेरणा प्रदान करते हुए युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि आज परमपूज्य कालूगणी की सांसारिक जन्मभूमि छापर में यह दूसरा दीक्षा समारोह हो रहा है। हमारे साहित्य में आता है–आदि मंगल, मध्य मंगल और अंत मंगल। चातुर्मास लगने से पहले दीक्षा होगी आज मध्य में हो रही है। मध्य में ये त्याग-संयम ग्रहण का समारोह हो रहा है।

दीक्षा प्राप्त होना, मुनि-साध्वी दीक्षा होना अनंत काल की हमारी यात्रा में एक महत्त्वपूर्ण अवसर होता है। आज तीन दीक्षार्थिनी बाईयाँ और एक दीक्षार्थी भाई, चार दीक्षार्थी उपस्थित हैं। दीक्षा के लिए ज्ञातियों की आज्ञा लेना भी आवश्यक है, मौखिक का और ज्यादा महत्त्व हो जाता है। ज्ञाती जनों की मौखिक आज्ञा ली। दीक्षार्थियों से भी सहमति ली।

पूज्यप्रवर ने आर्षवाणी के साथ श्रमण भगवान महावीर को नमस्कार करते हुए, आचार्य भिक्षु एवं उनकी उत्तरोत्तर परंपरा को वंदन करते हुए दीक्षार्थियों को तीन करण तीन योग से सर्व सावद्य योग का सामायिक पाठ से त्याग करवाए। आर्षवाणी से अतीत की आलोचना करवाई।

पूज्यप्रवर ने नवदीक्षित मुनि की एवं साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने नवदीक्षिता साध्वियों का केश लोच किया। यह केश लोच इस बात का प्रतीक है कि चोटी गुरु के हाथ में रहनी चाहिए। अनुशासन का बड़ा महत्त्व है।

पूज्यप्रवर ने आर्षवाणी के साथ नवदीक्षित को एवं साध्वीप्रमुखाश्री जी ने नव दीक्षिताओं को रजोहरण एवं प्रमार्जनी प्रदान करवाई।

आचार्यप्रवर ने आगे फरमाया कि मुमुक्षुओं की संख्या बढ़े पर मुमुक्षुओं की संख्या वृद्धि में पारिवारिकजनों का भी सहयोग चाहिए।

नामकरण संस्कार कराते हुए पूज्यप्रवर ने नवदीक्षित अश्विन का नाम मुनि आगम कुमार, मुमुक्षु रोशनी का नाम साध्वी रोशनीप्रभा, मुमुक्षु तारा का साध्वी तीर्थप्रभा एवं मुमुक्षु दीक्षा का साध्वी दीक्षाप्रभा प्रदान किया।

दीक्षा के उपक्रम के दौरान आचार्यश्री ने फरमाया कि आज के दिन ही मेरी भी दीक्षा हुई थी। मुझे दीक्षा लिए हुए ४८ वर्ष ४ महीने हो गए। मेरी दीक्षा सरदारशहर में गुरुदेव तुलसी की आज्ञा से मुनि सुमेरमल जी स्वामी के द्वारा हुई। आज साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की अर्द्धवार्षिक पुण्यतिथि है। हमारे नए साध्वीप्रमुखाजी को साध्वीप्रमुखा पद पर आसीन हुए दो महीने हो गए। आज के दिन आचार्यश्री ने अपने संसारपक्षीय ज्येष्ठ भ्राता सुजानमल दुगड़ सहित बहनों और अन्य लोगों को याद करते हुए अनेक घटना प्रसंगों का वर्णन किया। सुजानमल दुगड़ व साध्वी जिनप्रभाजी ने उस समय के घटना प्रसंगों का वर्णन किया।

वहीं दूसरी ओर पूर्व मंत्री सावित्री जिंदल ने आचार्य महाश्रमण जी के दर्शन किए तो आचार्यश्री ने उन्हें आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि राजनीति में होने के बावजूद भी सावित्रीजी एक श्राविका हैं, जो सामायिक भी करती हैं। सावित्री जिंदल ने अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करते हुए कहा कि आज मुझे आपश्री के दर्शन कर अपार प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। आपश्री उदार चिंतन वाले और विश्व का कल्याण करने वाले हैं। हरियाणा के लिए यह गौरव की बात है कि आज हरियाणा से भी दीक्षा हुई हैं और मैं भी इस अवसर पर उपस्थित हो सकी। (शेष पृष्ठ २ पर)

आचार्यप्रवर ने करी 'कालूगणी अभिवंदना सप्ताह' मनाने की घोषणा

श्रुत संपन्न आचार्य थे परम पूज्य कालूगणी : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, १० अक्टूबर, २०२२

महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आज भाद्रव शुक्ला पूर्णिमा है। भाद्रव महीना जैन शासन में अध्यात्म की साधना की दृष्टि से दिगंबर और श्वेतांबर दोनों परंपराओं के संदर्भ में अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है। पर्युषण महापर्व, संवत्सरी और दस लक्षण पर्व इस भाद्रव मास में अवतरित होते हैं।

यह महीना चार आचार्यों के महाप्रयाण के साथ जुड़ा हुआ है। भाद्रव कृष्णा द्वादशी को जयाचार्य का महाप्रयाण हुआ। भाद्रव शुक्ला छठ को परमपूज्य कालूगणी का महाप्रयाण हुआ। भाद्रवा शुक्ला द्वादशी को पूज्य डालगणी का महाप्रयाण हुआ।

भाद्रवा शुक्ला त्रयोदशी के दिन परमपूज्य हमारे धर्मसंघ के प्रथम आचार्य भिक्षु स्वामी का महाप्रयाण हुआ।

हम पदोन्नति की दृष्टि से देखें तो भाद्रवा शुक्ला तृतीया के दिन मुनि तुलसी को परमपूज्य कालूगणी ने अपना उत्तराधिकारी युवाचार्य प्रगट रूप में मनोनीत किया था। भाद्रव शुक्ला नवमी को परम वंदनीय आचार्य तुलसी का औपचारिक रूप में गंगापुर में आचार्य पदारोहण हुआ था। इसी दिन आचार्य तुलसी ने मुझे महाश्रमण पद पर प्रतिष्ठित किया था। साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी को महाश्रमणी पद पर प्रतिष्ठित किया था। (शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 - 25 सितंबर, 2022

✦ *प्रवृत्ति को छोड़ना कठिन है, परंतु प्रवृत्ति में होने वाली आसक्ति को छोड़ा जा सकता है। फिर प्रवृत्ति तुम्हारी आत्मा को मलिन बनाने वाली नहीं बनेगी।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

अस्तिकाय का सिद्धांत जैन दर्शन का एक मौलिक और महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ७ सितंबर, २०२२

भाद्रवा शुक्ला द्वादशी सप्तमाचार्य परमपूज्य डालगणी का 'महाप्रयाण दिवस' और युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी का 'आज युवाचार्य मनोनयन दिवस' भी है। आज ही के दिन गंगाशहर में परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने महाश्रमण मुनि मुदित कुमार जी को युवाचार्य महाश्रमण के रूप में अपने उत्तराधिकारी का मनोनयन किया था।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने अनंतर पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया कि भंते! अस्तिकाय कितने प्रज्ञप्त हैं? उत्तर–गौतम! अस्तिकाय पाँच प्रज्ञप्त हैं–धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशस्तिकाय, जीवास्तिकाय और पुद्गलास्तिकाय।

हमारी दुनिया में जीव और अजीव ये दो तत्त्व हैं। जैन दर्शन द्वैतवादी दर्शन है। उसके दो तत्त्व बताए हैं। इन दो तत्त्वों का विस्तार किया जाए तो पाँच अस्तिकाय भी प्रस्तुत किए जा सकते हैं। छः द्रव्य और नौ तत्त्व भी प्रस्तुत किए जा सकते हैं। जीव और अजीव को सांख्यवादी, द्वैतवादी भी मानते हैं। किंतु अस्तिकाय का सिद्धांत जैन दर्शन का एक मौलिक और महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है। इन पाँच अस्तिकाय के साथ काल को जोड़ा जाए तो छः द्रव्य हो जाते हैं।

प्रश्न है कि अस्तिकाय होता क्या है? अस्ति शब्द के दो अर्थ हैं–त्रैकालिक अस्तित्व और प्रदेश। काय का अर्थ है–राशि समूह। प्रदेश समूह अस्तिकाय होता है। जिन प्रदेशों का अस्तित्व शाश्वत-स्थायी है, त्रैकालिक है। इन पाँच अस्तिकायों में पुद्गलास्तिकाय सबसे अंत में लिया गया है। अमूर्त अमूर्त को पहले बता दिया फिर एकमात्र पुद्गलास्तिकाय मूर्त है, इसलिए इसे अंत में बता दिया गया है।

छः द्रव्यों में जीवास्तिकाय को अंत में लिया गया है, कारण प्रथम पाँच द्रव्य अचेतन है, जीव चेतन है। जो पाँच समान हैं, उनको पहले से लिया गया। ये पाँच तो लोक में हैं ही पर आकाशस्तिकाय अलोक में भी हैं। धर्मास्तिकाय कितने वर्ण, गंध, रस और स्पर्श वाला होता है? उत्तर दिया कि ये अवर्ण, अगंध, अरस, अस्पर्श वाला है। धर्मास्तिकाय चारों बातें नहीं होती। अरूपी हैं, अजीव हैं, शाश्वत हैं, अवस्थित हैं और लोक द्रव्य हैं।

लोकाकाश के घटक तत्त्वों में पहला धर्मास्तिकाय होता है। इसलिए इसे लोक द्रव्य कहा गया है। हम सक्षम हैं, तो कार्यकारी बने रहें, यह धर्मास्तिकाय से प्रेरणा ले सकते हैं।

अधर्मास्तिकाय ठहरने में सहयोग करता है बाकी सब धर्मास्तिकाय की तरह है। जीव और पुद्गल गति निवृत्ति करते हैं। आकाशस्तिकाय की प्रमाणता लोकालोक परिमाण है। जीवास्तिकाय द्रव्य से अनंत है। बाकी कई बातें धर्मास्तिकाय समान हैं। गुण की दृष्टि से आकाश अवगाहन-स्थान देता है। जीवास्तिकाय का गुण है–उपयोग। चेतना व्यापार उपयोग है। पुद्गलास्तिकाय में भिन्नता है। यह रूपी हैं। द्रव्य से अनंत है, क्षेत्र से लोकप्रमाण है। हमेशा था और हमेशा रहेगा। यह मूर्त है। गुण से यह ग्रहण गुण वाला, गलन-मिलन स्वभाव वाला है। ग्रहण गुण पुद्गलास्तिकाय का स्वभाव है।

ये पाँचों अस्तिकाय हमारे जीवन से भी जुड़े हैं। हमारे उपयोग में आते हैं। ये कुछ बातें भगवती सूत्र के दसवें उद्देश्क में बताई गई हैं जो मैंने बताई हैं।

आज भाद्रव शुक्ला द्वादशी है। दो प्रसंग तो संयोजक मुनिजी ने बता दिए। आज के दिन से एक प्रसंग और जुड़ा है। आज के दिन परमपूज्य भिक्षु स्वामी ने संथारा ग्रहण किया था। भिक्षु स्वामी हमारे धर्मसंघ के प्रवर्तक हैं। दूसरा प्रसंग है हमारे धर्म के सप्तम आचार्य पूज्य डालगणी का वार्षिक महाप्रयाण का दिन है। आज के दिन लाडनूं में उनका महाप्रयाण हुआ था।

पूज्य डालगणी का मनोनयन पूर्व आचार्य द्वारा न होकर धर्मसंघ के बड़े साधु मुनिश्री कालूजी रेलमगरा द्वारा हुआ। उन्होंने बारह वर्ष तक धर्मसंघ की सेवा की थी। तेजस्वी आचार्य के रूप में वे ख्यातिप्राप्त हैं। 'करें हम वंदन बारंबार' गीत का सुमधुर संगान किया। डालगणी को हमारा बार-बार वंदन है। उनकी विशेषताएँ हमारे जीवन में भी उतरें।

तीसरा प्रसंग है–परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञ ने आज के दिन गंगाशहर में वि०सं० २०५४ को मुझे अपने उत्तराधिकार की पछेवड़ी धारण करवाई थी। आचार्य महाप्रज्ञ जी का अपना वैदुष्य था, उनकी साधना उत्कृष्ट थी। हमारे धर्मसंघ में दस आचार्यों में सबसे ज्यादा उनका जीवन काल था। उन्होंने भी यात्राएँ की थीं। गुजरात में 'दो चातुर्मास' किए तो महाराष्ट्र में दो 'मर्यादा महोत्सव' दिए। और भी अनेक जगह चातुर्मास किए। आगम संपादन का भी कितना कार्य किया था। वे अनेक भाषाओं के जानकार थे। उनके योग से आज का दिन जुड़ा है। हम उनका श्रद्धा से स्मरण करते हैं।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। पूज्यप्रवर ने कोंकणवासियों की अर्ज पर मुंबई चातुर्मास के बाद कोंकण क्षेत्र परसने की कृपा करवाई।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि साधु कंचन-कामिनी का त्यागी होता है।

दीक्षा ग्रहण करना जीवन यात्रा...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि आदमी को भीतर के सौंदर्य के आनंद का अनुभव करना चाहिए। भीतर का सौंदर्य ही दीक्षा है। असीम सुख का अनुभव करना, असीम सौंदर्य की अनुभूति करना, असीम शांति का अनुभव करना ही दीक्षा है–आज ये चारों मुमुक्षु इन सबको पाने के लिए एक नए मार्ग अध्यात्म के मार्ग पर अग्रसर हो रहे हैं।

मुनि धर्मरुचि स्वामी ने अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त की।

दीक्षा से पूर्व मुमुक्षु भाविका ने चारों मुमुक्षुओं का परिचय दिया। पारमार्थिक शिक्षण संस्था के संयोजक बजरंग जैन ने आज्ञा पत्र का वाचन किया। चारों मुमुक्षुओं ने अपनी भावना पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अर्पित की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

श्रुत संपन्न आचार्य थे परम पूज्य...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

भाद्रव शुक्ला पूर्णिमा को परमपूज्य कालूगणी का आचार्यपद पर आरोहण हुआ था। आज उनका ११४वाँ आचार्य पदारोहण दिवस है। हम छापर में चातुर्मास कर रहे हैं जो कालूगणी प्रवर की जन्मभूमि है। आचार्य पद पर आरूढ़ होना और वह भी जैन श्वेतांबर तेरापंथ के आचार्यपद पर आरूढ़ होना एक विशेष बात है।

एक आचार्य के अनुशासन में पलने वाला, चलने वाला जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ है। आचार्य द्वारा भावी आचार्य का मनोनयन होता है। णमो आयरियाणं नमस्कार महामंत्र में मध्य तीसरा पद है। आचार्य स्वयं आचार का पालन करें व दूसरों को पालने में सहयोग दें। सारणा-वारणा करें।

आचार्य अपने सिद्धांतों को जानने वाले हों, साथ में पर सिद्धांत को भी जानने वाले हों। यह श्रुत संपदा आचार्य में हो। पूज्य कालूगणी भी आचार पालन में जागरूक थे। श्रुत संपन्नता थी। संस्कृत भाषा का ज्ञान था। शरीर-संपदा भी आचार्य की अच्छी रहे। यात्रा कर सके, प्रवचन दे सके। इंद्रियाँ सक्षम रहनी चाहिए। श्रावकों की संभाल कर सकें। कालूगणी का जीवनकाल लगभग ६० वर्ष का था। अनेक यात्राएँ की थीं।

आचार्य की वचन संपदा भी अच्छी हो। गुरुदेव तुलसी से पूज्य कालूगणी के व्याख्यानों के बारे में सुना था। आचार्य अध्यापन भी करा सकें। तार्किकता-तर्कशीलता हो। आचार्य की शिष्य संपदा भी हो। पूज्य कालूगणी ने कितनी दीक्षाएँ प्रदान करवाई थी। आचार्य में व्यवस्था करने का भी कौशल हो। मौके पर कड़ाई भी कर सकें। आवश्यकता पड़े तो फूल से भी कोमल हो जाएँ। धर्मसंघ की सुरक्षा और विकास कर सकें।

पूज्य कालूगणी पूर्ण चंद्रमा की कलाओं के समान भाद्रवी पूनम को हमारे धर्मसंघ के अष्टम आचार्यपद पर सुशोभित हुए थे। मैं परमपूज्य कालूगणी का श्रद्धा भाव के साथ स्मरण और उनको वंदन करता हूँ। हम उनकी जन्मभूमि में एक सप्ताह कालूगणी का मनाएँ ऐसा प्रयास करें। कालूगणी अभिवंदना सप्ताह भी मनाएँ। उनके जीवन के अलग-अलग विषय बनाकर उन पर विवेचना हो। हमारे संयोजक मुनिजी तारीख देख लें।

पूज्यप्रवर ने तपस्याओं के प्रत्याख्यान करवाए। मुनि खुश कुमारजी, मुनि अर्हम कुमारजी ने ग्यारह की तपस्या के प्रत्याख्यान लिए।

प्रेक्षा अधिवेशन चल रहा है। प्रेक्षा फाउंडेशन के संयोजक अशोक चिंडालिया ने प्रेक्षावाहिनी की जानकारी दी। केंद्र प्रभारी विजयश्री ने भी अपनी भावना रखी।

आचार्यप्रवर ने शिविरार्थियों को पावन पाथेय एवं आशीर्वचन फरमाया।

कन्या मंडल द्वारा गीत की प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि जो जीव अशुभ लेश्या में मृत्यु को प्राप्त करता है, उसे बोधि प्राप्त होना दुर्लभ है।

सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक महापर्व है - पर्युषण

शाहदरा, दिल्ली।

पर्युषण पर्व के प्रथम दिन शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने महापर्व की विशेषताओं को बताते हुए कहा कि दुनिया में दो प्रकार के पर्व मनाए जाते हैं—लौकिक और आध्यात्मिक।

शासनश्री साध्वी सुव्रताश्री जी ने खाद्य संयम के विषय में कहा कि प्रत्येक विशिष्ट साधना का आरंभ खाद्य संयम की साधना के साथ होता है। यदि स्वस्थ आत्मस्थ एवं समाधिस्थ रहना है तो खाद्य संयम करें।

शासनश्री साध्वी सुमनप्रभा जी ने गज सुकुमाल मुनि का जीवनवृत्त बताया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेमम की बहनों की गीतिका से हुआ। रात्रिकालीन कार्यक्रम संगीत संध्या का हुआ।

स्वाध्याय दिवस : पर्युषण पर्व के दूसरे दिन स्वाध्याय दिवस पर शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि ज्ञानावरणीय कर्मों का क्षयोपशम होने से ही स्वाध्याय हो पाता है। निरंतर स्वाध्याय करते रहने से प्रज्ञा का जागरण हो सकता है। साध्वी चिंतनप्रभा जी ने स्वाध्याय के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए।

रात्रिकालीन कार्यक्रम में 'मंगलपाठ का क्या प्रभाव' पर शासनश्री साध्वी रतनश्री जी का प्रभावी वक्तव्य हुआ।

अभिनव सामायिक दिवस : शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने श्रावक-श्राविकाओं को अभिनव सामायिक का प्रत्याख्यान करवाया। अभिनव सामायिक में किए गए प्रयोगों की विस्तार से व्याख्या की। साध्वी चिंतनप्रभा जी ने त्रिपदी वंदना एवं लोगस्स का ध्यान कराया।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेयुप कार्यकर्ताओं के विजय गीत से हुआ। तेमम की बहनों ने गीतिका का संगान किया। शाहदरा सभा मंत्री आनंद बुच्चा ने सामायिक के बारे में अपने विचार रखे।

तेयुप के उपाध्यक्ष अरविंद सिंघी ने श्रावक-श्राविकाओं का स्वागत किया। साध्वीश्री जी के सान्निध्य में ओसवाल भवन में लगभग ११७४ सामायिक हुई। आभार ज्ञापन तेयुप के क्षेत्रीय संयोजक विवेक दस्सानी ने किया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप क्षेत्रीय संयोजक चंद्रसेन श्यामसुखा ने किया।

सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया गया। रात्रि में अंत्याक्षरी का कार्यक्रम हुआ।

वाणी संयम दिवस : शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि जैन दर्शन के प्रमुख सिद्धांत चार हैं—कर्मवाद, आत्मवाद, लोकवाद एवं क्रियावाद। इनमें कर्मवाद का प्रथम स्थान है।

साध्वी चिंतनप्रभा जी ने वाणी संयम के संदर्भ में विचार व्यक्त किए। शासनश्री साध्वी सुव्रता जी ने तपस्वी की जानकारी दी।

कन्या मंडल की कन्याओं द्वारा गीतिका का संगान किया गया।

अणुव्रत चेतना दिवस : अणुव्रत चेतना दिवस का शुभारंभ अणुव्रत समिति ट्रस्ट सदस्यों के अणुव्रत गीत से हुआ। शासनश्री साध्वीश्री ने अपने वक्तव्य में कहा कि अणु यानी छोटे व्रत यानी संकल्प। इन छोटे-छोटे संकल्पों में विराट शक्ति छुपी हुई है। इन संकल्पों में परिवार, समाज, देश व राष्ट्र का निर्माण हो सकता है।

अणुव्रत विश्व भारती के मुख्य ट्रस्टी तेजकरण सुराणा, संगठन मंत्री डॉ० कुसुम लुनिया, अणुव्रत समिति ट्रस्ट के अध्यक्ष शांतिलाल पटावरी, शाहदरा सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद आदि ने अपने विचार रखे। तेमम की बहनों द्वारा गीत का संगान किया।

तपोनिष्ठ श्रावक पारसमल बोथरा ने २६ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

जप दिवस : तेमम बहनों की गीतिका से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि महावीर एक-दो दिन की साधना से नहीं बने हैं। कई जन्मों तक तीव्र तपस्याएँ तपी हैं। कठिनतम साधनाएँ आराधनाएँ की हैं।

साध्वीश्री जी ने तप के प्रकार एवं निष्ठा आस्था के साथ जप करने से प्राप्त होने वाली उपलब्धियों के विषय में बताया। साध्वी कार्तिकप्रभा जी ने कहा कि जप शब्द छोटा है पर इसमें बड़ी-बड़ी शक्तियाँ निहित हैं।

ध्यान दिवस : शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने अपने प्रवचन में माता त्रिशला के १४ स्वप्नों का वर्णन करते हुए कहा कि तीर्थंकर की माता १४ स्वप्न देखती है। वे सार्थक होते हैं।

हनुमान सेठिया ने ५० का व अन्य १३ तपस्वियों ने तप का भी प्रत्याख्यान किया। शाहदरा सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद ने कार्यक्रम का संचालन किया। रात्रि प्रेक्षाध्यान का प्रयोग शासनश्री साध्वी सुव्रताजी ने कराया।

संवत्सरी महापर्व : शासनश्री साध्वी रतनश्री जी के सान्निध्य में संवत्सरी महापर्व मनाया गया। सर्वप्रथम साध्वी कार्तिकप्रभा जी ने कहा कि धर्म साधना के तीन सूत्र हैं—अहिंसा, संयम और तपस्या। धर्म के प्रति सघन आस्था रखने वाले व्यक्तियों के चरणों में देवशक्ति भी नतमस्तक हो जाती है।

शासनश्री साध्वी सुमनप्रभा जी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने संवत्सरी पर्व की महत्ता बताई। शासनश्री साध्वी सुव्रताजी ने जैन धर्म की प्रभावक आचार्य परंपरा एवं तेरापंथ की गौरवशाली आचार्य परंपरा के संदर्भ में भावाभिव्यक्ति दी। साध्वी चिंतनप्रभा जी ने तेरापंथ धर्मसंघ की ६ साध्वीप्रमुखाओं के जीवन प्रसंग प्रस्तुत किए।

क्षमायाचना दिवस : शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि आज का दिन निष्पत्ति का दिन है। आठ दिनों तक आपने सामायिक स्वाध्याय मौन, जप, तप आदि साधनाएँ की उसका सार या नवनीत आज निकालना है। वर्षभर में कोई अकृत किया दुश्चिंतन किया अथवा दुर्वचन के प्रयोग से किसी के दिल को आघात पहुँचाया है तो आज सरलमना बनकर क्षमायाचना कर लें। पर्युषण पर्व मनाने की यही सार्थकता है।

शासनश्री सुव्रताजी ने कहा कि क्षमा वह गेट है जिससे सीधा मोक्ष में पहुँचा जा सकता है। क्षमा वह अमृत है जो कटुता के जहर को अमृत बना देता है। क्षमा वह विजय मंत्र है जो प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है। अतः आप आज के दिन ऋजुमना बनकर क्षमा का आदान-प्रदान करें।

दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, अणुव्रत विश्व भारती की संगठन मंत्री डॉ० कुसुम लुनिया, तेमम के सहमंत्री सरला बैद, ओसवाल समाज के अध्यक्ष बाबूलाल दुगड़, शाहदरा सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद, गांधीनगर सभाध्यक्ष कमल गांधी, दिल्ली तेयुप से चंद्रसेन श्यामसुखा, शाहदरा सभा के निवर्तमान अध्यक्ष राजेंद्र सिंघी, हेमलता बुच्चा आदि ने अपने विचार रखे। संयोजन मंत्री आनंद बुच्चा ने किया।

✦ *आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

पर्युषण महापर्व का कार्यक्रम

गोगुंदा।

समणी मानसप्रज्ञा जी के सान्निध्य में पर्वाधिराज पर्युषण पर्व का भव्य आयोजन हुआ। पर्युषण पर्व के दौरान रावलिया, पदराड़ा आदि निकटवर्ती क्षेत्रों के भाई-बहनों ने भी प्रवचन का लाभ लिया। खाद्य संयम, स्वाध्याय, मौन, जप, आदि दिवसों पर पचरंगी व सामायिक दिवस पर सतरंगी की आराधना हुई। अणुव्रत दिवस पर लगभग १४५ लोगों ने अणुव्रत नियमों को स्वीकार कर अणुव्रती बने।

समणी मानसप्रज्ञा जी ने निरंतर भक्तामर पाठ के साथ भगवान महावीर के जीवन दर्शन को सविस्तार बताया।

खाद्य संयम दिवस के अवसर पर समणी ज्योतिप्रज्ञा जी ने कहा कि पर्युषण का प्रथम दिन खाद्य संयम है। क्योंकि खाद्य संयम किए बिना अगली आराधनाएँ अधूरी हैं। खाद्य शुद्धि से ही विचार शुद्धि संभव है।

स्वाध्याय दिवस के अवसर पर समणीजी ने कहा कि स्वाध्याय वह समुद्र है, जिसमें अनेक श्रुत रूपी मोती भरे हैं। स्वाध्याय वह बुहारी है जिससे आत्मा रूपी घर के कचरे को साफ किया जाता है। श्रुत रूपी डोर से बंधी आत्मा मुक्ति को प्राप्त कर लेती है।

सामायिक दिवस के अवसर पर समणीजी ने कहा कि एक सामायिक अर्थात् ५० मिनट तक समता साधना। समणी जी ने अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया। आपने एक सामायिक से आठों कर्मों का क्षय होता है—इस तथ्य को सुंदर ढंग से समझाया।

वाणी संयम दिवस के अवसर पर समणीजी ने कहा कि वाणी को वीणा बनाएँ, बाण नहीं। ढंग से बोलें, ढोंग से नहीं। अठारह पापों में छः पाप केवल वाणी से लगते हैं। सत्य व प्रिय भाषा से लोकप्रियता बढ़ती है।

अणुव्रत दिवस के अवसर पर समणीजी ने कहा त्याग की महत्ता को बताते हुए आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत के ग्यारह नियमों को सविस्तार समझाया।

जप दिवस के गौरव को उजागर करते हुए समणीजी ने कहा कि जप क्यों, जप कैसे, जप दिशा, मंत्र का अर्थ, मंत्र हेतु दिशा व स्थान, उच्चारण शुद्धि आदि बिंदुओं को रोचक ढंग से समझाया।

ध्यान दिवस पर आचार्य तुलसी रचित प्रेक्षा गीत का संगान करते हुए समणीजी ने कहा कि ध्यान संस्कार व आदत परिवर्तन का सफल उपक्रम है। अशुभ ध्यान से बचें तथा शुभ ध्यान में रमें। ध्यान का प्रायोगिक रूप भी करवाया।

संवत्सरी महापर्व : डॉ० समणी ज्योतिप्रज्ञा जी ने कहा कि आज का दिन आत्मालोचन, आत्मनिरीक्षण व आत्मपरीक्षण का दिन है। आपने प्रतिक्रमण का एक छोटा-सा ध्यान भी करवाया। द्रोपदी, सीता, हरिश्चंद्र, देवकी, ढंढणमुनि आदि के कष्टों को बताते हुए कहा कि इन महापुरुषों के जीवन में आने वाले कष्ट पूर्वजन्म की आलोयणा न करने के कारण हुए। अतः गलती होने पर तत्काल खमतखामणा कर लेनी चाहिए। महासती चंदनबाला की रोमांचक कहानी सुनकर कई नेत्र सजल हो उठे। मगन ज्ञान मंदिर का हॉल खचाखच भरा था। सामायिक व पौषध में पंक्तिबद्ध बैठे भाई-बहन धर्माराधना में लीन थे।

क्षमापना दिवस पर समणीजी ने कहा कि क्षमापना से मन की प्रसन्नता बनी रहती है। जहाँ मन की प्रसन्नता है वहाँ बंधन की संभावना कम रहती है। क्षमापना से आत्मा में हल्कापन आता है।

क्षेत्रीय भाई-बहनों ने समणीजी के प्रति मंलभावना व कृतज्ञता ज्ञापित की। पूरे प्रवास में होने वाले कार्यक्रमों की संक्षिप्त झलक डॉक्यूमेंट्री द्वारा प्रस्तुत की।

वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

कटक।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के निर्देशन में आजादी का अमृत महोत्सव के परिप्रेक्ष्य में 'असली आजादी अपनाओ' में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का विषय था—'क्या प्रचुर भौतिक संसाधन ही आनंद का घोतक है?' प्रतियोगिता के निर्णायक डॉ० अभिषेक शर्मा व डॉ० राहुल त्रिपाठी थे।

प्रतियोगिता में कुल १५ प्रतिभागियों ने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि बीसवीं सदी के महान परिव्राजक संत हुए हैं आचार्य तुलसी। वे क्रांतिकारी महापुरुष थे। उन्होंने युग की नब्ज को देखकर नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा व चारित्रिक उन्नयन के लिए अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ पूजा चोरड़िया द्वारा मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण अणुव्रत समिति के अध्यक्ष मुकेश डूंगरवाल ने दिया। निर्णायक डॉ० अभिषेक शर्मा ने प्रांजल भाषा में अपने विचार व्यक्त किए। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर शांतिलाल लोढ़ा, द्वितीय स्थान पर शुभंकरण सिंघी, तृतीय स्थान पर इंद्रा लूणिया रहे। विजेताओं एवं प्रतिभागियों को अणुव्रत समिति द्वारा पुरस्कृत किया गया। आभार ज्ञापन संगठन मंत्री प्रतीक सिंघी ने व संचालन मंत्री विकास नवलखा ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 - 25 सितंबर, 2022

✦ *आत्मा की दृष्टि से जो सेवा की जाती है, वह आध्यात्मिक सेवा है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

चेन्नई

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में महिला मंडल के तत्त्वावधान में रात्रिकालीन कार्यक्रम में हाईटेक अंताक्षरी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार से हुई। कार्यक्रम का संचालन राजेश खटेड़ ने किया।

संयोजिका सपना श्रीमाल ने प्रतियोगियों को ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप चार ग्रुप में विभाजित किया। साध्वीश्री जी ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों में मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान का विकास भी होता है। ऐसे कार्यक्रमों से सभी को जुड़ना चाहिए।

कार्यक्रम में उपस्थिति सभी का स्वागत मंत्री रीमा सिंघवी ने किया। लगभग ४५ प्रतियोगियों ने भाग लिया। प्रथम स्थान प्राप्त किया ज्ञान टीम ने, द्वितीय स्थान दर्शन एवं तृतीय स्थान तप ने प्राप्त किया। भाग लेने वाले सभी प्रतियोगियों का एवं खटेड़ बंधु का सम्मान महिला मंडल द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के सूत्रधार राजेश खटेड़, जैनेंद्र, वंदना एवं याशिका खटेड़ ने कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम में महिला मंडल के पदाधिकारीगण एवं कार्यसमिति सदस्यों का पूरा सहयोग रहा। धन्यवाद ज्ञापन संयोजिका बसंता बाबेल ने किया।

● अभातेममं द्वारा निर्देशित एवं तेममं के तत्त्वावधान में आयोजित रूपांतरण एक्सप्रेस प्रतिक्रमण कार्यशाला को संबोधित करते हुए साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि प्रश्न किया गया—प्रतिक्रमण से जीव क्या प्राप्त करता है? आगमिक समाधान मिला, व्रतों में होने वाले दोष रूपी छिद्रों को आवरण प्रदान करने का काम प्रतिक्रमण करता है। ऐसा करने से आश्रव को रोका जा सकता है। प्रतिक्रमण करने वाला समाधिस्थ होकर साधना के पवित्र उपहार समाधि को प्राप्त कर लेता है।

अतीत का अवलोकन कर होने वाली भूलों के लिए प्रायश्चित करता है। प्रतिक्रमण आंतरिक स्नान की प्रवृत्ति है। जिससे आत्मा विशुद्ध होती है।

महिला मंडल की अध्यक्षा पुष्पा हिरण ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया। महिला मंडल द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया। इस अवसर पर साध्वी डॉ० राजुलप्रभा जी ने कहा कि मन की ग्रंथियों का विमोचन करने के लिए प्रतिक्रमण एक अनूठी पद्धति है। उन्होंने प्रतिक्रमण को सुख का उपवन बताया। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल की मंत्री रीमा सिंघवी ने किया एवं सहमंत्री कंचन भंडारी ने आभार ज्ञापित किया।

राजराजेश्वरी नगर

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में तेममं आर०आर० नगर के तत्त्वावधान में रूपांतरण शिल्पशाला का 'शुक्ल' पर कार्यशाला आयोजित की गई।

साध्वीश्री जी ने शुक्ल का अर्थ बताया—पवित्रता। जिसमें जितनी पवित्रता होगी वह उतना ही शुक्ल होगा। मन जितना पवित्र होगा उसका आभामंडल उतना ही पवित्र होगा तथा दूसरों को भी उस आभामंडल में शुक्लता का अहसास होगा। यही कारण है चारित्रात्माओं की उपस्थिति का एक अलग ही प्रभाव होता है, क्योंकि उनके आभामंडल से श्रावकों को एक अलौकिक शक्ति का अनुभव होता है।

मंत्र-जप के द्वारा लब्धियाँ एवं शक्तियाँ प्राप्त होती हैं, विचारों में पवित्रता आती है, दूषित विचारों का नाश होता है। जहाँ शुद्धता होती है वहाँ पवित्रता होती है, धर्म का वास होता है। धर्म वहीं ठहरता है। मंत्री सीमा छाजेड़ ने आभार व्यक्त किया।

● शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में तेममं द्वारा रूपांतरण तेजः पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ महिला मंडल की बहन हेमलता सुराणा ने पार्श्व स्तुति से की।

उपाध्यक्ष शोभा बोथरा ने सभी का स्वागत किया। साध्वी अमितरेखा जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। साध्वी अमितरेखा जी ने कहा कि मंगलभावना के शब्द में तेजः शब्द आता है। तेज से मनोबल, वचनबल और कायबल प्रबल होता है। तपस्या से तेज शक्ति बढ़ती है। आदमी जितना साहस करता है, शक्ति और तेज संपन्न बनता है। जप से शक्ति और तेज बढ़ता है।

आभार ममता दुगड़ ने व्यक्त किया। कार्यशाला का संचालन सीमा जैन ने किया।

बालोतरा

मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में न्यू तेरापंथ भवन में नववधू सम्मेलन का आयोजन हुआ। महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला देवी संकलेचा ने बताया कि मुनिश्री द्वारा एक रोचक प्रतियोगिता करवाई गई, जिसमें बड़ी संख्या में बहनों ने भाग लिया। लगभग ५० सोहलिया करने वाली बहनें १६ दिन तक लगातार एकाशन का तप करती हैं।

इस अवसर पर सभी बहनों ने मुनिश्री की प्रेरणा से भ्रूण हत्या न करने का संकल्प लिया और सभी ने फार्म भरे, इसके साथ ही सभी बहनों को १४ नियमों की भी प्रेरणा दी गई। इस अवसर पर अभातेममं सदस्य व मारवाड़ क्षेत्र प्रभारी सारिका बागरेचा, मंत्री संगीता बोथरा, उपाध्यक्ष रानी बाफना, प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा, निवर्तमान अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल उपस्थित थे।

● अभातेममं के निर्देशानुसार तुलसी शिक्षा परियोजना के तहत तत्त्वज्ञान व तत्त्व विज्ञ परीक्षा का प्रमाण पत्र व पुरस्कार सम्मान समारोह का आयोजन तेममं के तत्त्वावधान में मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में न्यू तेरापंथ भवन में किया गया। मुनिश्री ने कहा कि ज्यादा-से-ज्यादा श्रावक-श्राविका तत्त्वज्ञानी बनें। जिससे उनके ज्ञान में वृद्धि हो और धर्म को गहराई से समझ सकें।

महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला देवी संकलेचा ने सभी परीक्षार्थियों को बधाई दी। परीक्षा केंद्र व्यवस्थापिका विमला गोलेछा ने बताया कि पिछले साल २०२१ में तत्त्वज्ञान की परीक्षा में कक्षा तृतीय में ऑल इंडिया में महिला मंडल की तीन बहनों ने स्थान प्राप्त किया। जिसमें तमन्ना भंडारी ने प्रथम, मंत्री संगीता बोथरा ने द्वितीय एवं ममता मांडोत ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। तत्त्वज्ञान और तत्त्वविज्ञ परीक्षा में प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सभी संभागियों को पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम के प्रायोजक अशोक कुमार, भरत कुमार, कोठारी परिवार रहे। तेरापंथ सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, मंत्री महेंद्र बैद सहित पदाधिकारीगण एवं अन्य गणमान्यजन कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन केंद्र व्यवस्थापिका विमला गोलेछा ने किया।

भीलवाड़ा

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेममं द्वारा सेठ मुरलीधर मानसिंह सुर निलयम अंध विद्यालय में स्नेह प्रोजेक्ट के अंतर्गत जरूरत की सामग्री बच्चों को उपलब्ध कराई गई। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल के नारी जागरण गीत से हुई।

अभातेममं की राष्ट्रीय सहमंत्री नीतू ओस्तवाल ने मोटिवेशनल वक्तव्य से बच्चों में भरपूर जोश, उत्साह जगाया। अध्यक्ष मीना बाबेल ने अपने भाव व्यक्त किए। जिला अध्यक्ष महिला कांग्रेस रेखा हिरण ने भी बच्चों को शुभ भविष्य की उपमा देते हुए सरकार की अनेक योजनाओं की जानकारी दी। तेममं ने दो कम्प्यूटर इस स्कूल में भेंट किए।

कार्यक्रम का संचालन सचिव बधिर बाल कल्याण समिति बी०सी० लोगड ने किया। तेममं की टीम का आभार अंध स्कूल की प्रिंसिपल क्लेरा सिस्टर ने किया। कार्यक्रम में अंध स्कूल के इंचार्ज आदित्य सिंह, संगीत टीचर बलवीर सिंह नैनावटी, महिला कांग्रेस उपाध्यक्ष सुशीला जाट आदि अनेक गणमान्य जन उपस्थित थे।

नालासोपारा

अभातेममं निर्देशित प्रतिक्रमण की रूपांतरण शिल्पशाला तेरापंथ भवन में रखी गई। कार्यशाला की शुरुआत उपासिका लक्ष्मी मेहता एवं मंजु बाफना ने नवकार मंत्र द्वारा की। एरिया प्रभारी टीम की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुंबई कार्यकारिणी टीम से विशेष सहयोगी अंजु छाजेड़ ने किया।

उपासिका मंजु बाफना एवं लक्ष्मी मेहता ने अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल संयोजिका वनिता सोलंकी, सह-संयोजिका ज्योति हिरण, वर्षा धाकड़ एवं कोषाध्यक्ष मीना सोलंकी, कन्या मंडल प्रभारी शिल्पा चौहान की सराहनीय उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन सह-संयोजिका ज्योति हिरण ने किया।

माणसा

साध्वी सोमयशा जी के सान्निध्य में उत्तर गुजरात, महिला मंडल की संगठन संगोष्ठी का आयोजन हुआ। जिसमें वीजापुर, प्रातिज, सलाल, भिलोडा, मोडासा, चिलोडा, हिम्मतनगर, खेडब्रह्मा, माणसा सभी गाँव के अध्यक्ष-मंत्री ने अपने विचार रखे।

साध्वी सोमयशा जी ने कहा कि उत्तर गुजरात का महिला मंडल अपने आपमें जागरूक है। अब अपने कर्तव्य के प्रति हर महिला अपनी जागरूकता का परिचय देगी। साध्वी सरलयशा जी ने महिलाओं को अपने दायित्व के प्रति सतर्क करते हुए कहा कि बहनें साधु-संतों की रास्ते की सेवा का महत्त्व समझें। साध्वी ऋषिप्रभा जी ने बताया कि स्वस्थ और मस्त रहते हुए संघ की सेवा करें और परिवार को सुसंस्कारी बना सकती हैं।

कोयंबटूर

अभातेममं के निर्देशानुसार साध्वी उज्ज्वलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेममं द्वारा आयोजित रूपांतरण शिल्पशाला के अंतर्गत 'श्री' स्टेशन का आखरी पड़ाव 'शुक्ल' में विषय क्षमा पर कार्यशाला रखी गई। शुरुआत मंगलाचरण द्वारा मुक्ता नखत एवं चित्रा गोलछा ने की। साध्वी प्रबोधयशा जी ने बताया कि क्षमा एक बहुत छोटा-सा शब्द है, लेकिन इसका सही उपयोग करने वाले हमेशा खुश रहते हैं।

साध्वी धैर्यप्रभा जी ने कहा कि क्षमा करने वाला हमेशा बलवान होता है, लेकिन क्षमा माँगने वाला शक्तिशाली होता है। क्षमा माँगने से कोई आदमी छोटा नहीं होता। साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी ने कहा कि हमें समता सहनशीलता एवं सकारात्मकता के भाव रखने चाहिए। क्षमा माँगने या देने में कोई औपचारिकता नहीं होनी चाहिए, मन से होना चाहिए।

धन्यवाद ज्ञापन मधु चोरड़िया ने किया। संयोजन उपाध्यक्ष मोनिका लुनिया ने किया।

सहन करो सफल बनो कार्यशाला का आयोजन

ठाणे।

शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में 'सहन करो सफल बनो' की कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत कन्या मंडल की गीतिका द्वारा मंगलाचरण से हुई।

शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी ने कहा कि आज का जो टॉपिक है वह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है—सहन करो सफल बनो। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी जीवन जीने की कला सिखाते हैं, जीवन विज्ञान को अपने जीवन में उतारना चाहिए।

सौभाग्य से समणी सन्मतिप्रज्ञा जी पधारे हुए थे उन्होंने कहा कि हमारे फिजिकल शरीर व मेंटली माइंड में एनर्जी है जो हर वक्त शरीर को एक्टिव रखती है। हमारा व्यवहार है मन, वाणी, शरीर से चलता है, हर प्रतिकूल व अनुकूल परिस्थितियों में सहन करने की क्षमता होनी चाहिए। कार्यक्रम का संचालन लीना गोगड़ ने किया।

साध्वीवृंद ने आध्यात्मिक गेम खिलाए। ठाणे सिटी कन्या मंडल संयोजिका, विधि श्रीश्रीमाल, सह-संयोजिका भामिनि पारख, तनिष्का छाजेड़, प्रभारी वनिता मेहता सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की कार्यक्रम उपस्थिति रही।

कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

दिल्ली।

जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी के सान्निध्य में दिल्ली एनसीआर क्षेत्र स्तरीय 'कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यशाला' का आयोजन किया गया। दिल्ली सभा के आयोजकत्व में अणुव्रत भवन में आयोजित कार्यशाला में दिल्ली एनसीआर की १८ सभाओं के पदाधिकारी व सदस्यों ने अपनी सहभगिता दर्ज की। साध्वी संघमित्रा जी ने महासभा की बहुमुखी गतिविधियों की सराहना करते हुए और अधिक सघनता से गुरुदृष्टि को आराधते हुए कार्य करने की प्रेरणा दी।

प्रथम सत्र का शुभारंभ श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन कृष्णकुमार जैन आंचलिक प्रभारी व सभा गीत दिल्ली सभा के सदस्यों द्वारा हुआ।

शासनश्री साध्वी शीलप्रभा जी ने गीतमय उद्‌बोधन से कार्यकर्ताओं में उत्साह का संचार किया और श्रावकत्व को निखारने की प्रेरणा दी। स्वागत भाषण करते हुए दिल्ली सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया ने दिल्ली में सभा द्वारा चल रहे कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला। महासभा के समागत पदाधिकारियों सहित ट्रस्टी, पंच मंडल, संरक्षक आदि कन्हैयालाल पटावरी, संपतमल नाहटा, संजय सुराणा (सूरत), दिलीप सिंघवी (जोधपुर), के०सी० जैन, हितेंद्र मेहता (इंदौर), जसराज मालू (दिल्ली) आदि का सम्मान किया गया।

महासभा के महामंत्री विनोद बैद ने प्रशिक्षण सत्र की रूपरेखा प्रस्तुत की। महासभा के अध्यक्ष मनसुख सेठिया ने महासभा द्वारा संचालित प्रवृत्तियों में सक्रियता से जुड़ने का आह्वान किया। इस स्वागत सत्र का संचालन दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया।

द्वितीय सत्र में संचालन करते हुए महामंत्री विनोद बैद ने संस्था संचालन निर्देशिका के बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की। उपाध्यक्ष संजय खटेड़ ने संविधान तथा वैधानिक व्यवस्थाओं के बारे में बताया।

संरक्षक कन्हैयालाल पटावरी ने प्रशिक्षण कार्यशाला की सराहना करते हुए इसकी उपयोगिता को महत्त्वपूर्ण बताया।

तृतीय सत्र में महासभा उपाध्यक्ष सुमन नाहटा ने बेटी तेरापंथ की व मेट्रीमोनियल प्रकल्पों की जानकारी दी। महासभा अध्यक्ष मनसुख सेठिया ने वरिष्ठ जन सम्मान, चिकित्सा सहयोग आदि के बारे में बताया। इस सत्र में पुष्पा बैंगानी ने जैन भारती और विज्ञप्ति के प्रकाशनों पर प्रकाश डाला। इस सत्र में सभी की जिज्ञासाओं का समाधान महामंत्री विनोद बैद, उपाध्यक्ष संजय खटेड़ व अध्यक्ष मनसुख सेठिया ने किया। कार्यक्रम की आयोजना हेतु दिल्ली सभा की ओर से संयोजक बाबूलाल दुगड़ (उपाध्यक्ष), लक्ष्मीपत बोथरा (उपाध्यक्ष) व अशोक संचेती (संगठन मंत्री) की भूमिका प्रमुख रही। आभार ज्ञापन महासभा की ओर से के०के० जैन ने व दिल्ली सभा की ओर से बाबूलाल दुगड़ ने किया।

महासभा कार्यसमिति सदस्य कमल बैंगानी, मन्नालाल बैद, कैलाश डूंगरवाल व संजीव बैद (फरीदाबाद) की उपस्थिति रही। दिल्ली की संघीय संस्थाओं, महिला मंडल, तेयुप व टीपीएफ के पदाधिकारी व सदस्य भी उपस्थित थे।

जीवन में संकल्प क्यों करें

कांदिवली।

इस अवसर पर साध्वी निर्वाणश्री जी ने ध्यान के विशेष प्रयोग के साथ जीवन में नए आयाम खोलने की प्रेरणा दी। साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा ने 'जीवन में संकल्प क्यों करें?' का प्रशिक्षण दिया व मोटीवेटर तरुणा बोहरा ने संप्रेरक संभाषण दिया। शहर के अनेक स्थानों से करीब १५० से अधिक किशोर पीढ़ी ने इसमें भाग लिया। इस अवसर पर ग्रुप डिबेट का शानदार आयोजन हुआ जिसमें ५-५ किशोरों एवं ५-५ कन्याओं के ५ ग्रुप संभागी बने। ऑनलाइन बनाम ऑफ लाइन की इस वाद-विवाद चर्चा के निर्णायक बने अभातेमम की पूर्व महामंत्री तरुणा बोहरा, अध्यक्ष रचना हिरण एवं तेयुप कांदिवली के पूर्व मंत्री सौरभ दुधेड़िया। विजेता टीम को विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया। सभी संभागियों को भी प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। संकल्पों के स्वस्तिक के अंतर्गत सबने एक-एक संकल्प ग्रहण कर इसे यादगार बनाया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✻ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✻ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	11,00,000
✻ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✻ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✻ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✻ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✻ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✻ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✻ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✻ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✻ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✻ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✻ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

अहमदाबाद।

अभिनंदन रसिकलाल शाह के नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक आनंद बोथरा, दिनेश धूपिया ने मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ संपादित किया। तेयुप सहमंत्री-प्रथम जय छाजेड़ ने डोशी परिवार को बधाई दी।

परिषद की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट दी गई। परिवार की ओर से रसिकलाल शाह ने तेयुप एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन आनंद बोथरा ने किया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

अहमदाबाद।

जितेंद्र डोशी, सागर डोशी के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रकाश धींग, पंकज डांगी ने संपादित करवाया। तेयुप अध्यक्ष अरविंद संकलेचा एवं संगठन मंत्री दीपक संचेती ने मंगलकामना प्रेषित की।

परिषद की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट दी गई। परिवार की ओर से जितेंद्र डोशी ने परिवार एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

नामकरण संस्कार

साउथ हावड़ा।

पाली-मारवाड़ निवासी आनंद-मंजु डोसी के सुपुत्र अनुपम-मेघ डोसी के पुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से किया गया। संस्कारक बिरेंद्र सेठिया, गगन दीप बैद एवं सुनीता नाहटा के साथ मिलकर जैन मंत्रोच्चार के द्वारा कार्यक्रम संपादित किया।

नाना प्रवीन पटावरी ने परिषद एवं संस्कारकों को धन्यवाद दिया।

आचार्य महाश्रमण एजुकेशन सेंटर शुभारंभ

कांदिवली

तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन एवं www.itguruji.in के तत्त्वावधान में आचार्य महाश्रमण एजुकेशन सेंटर का तेरापंथ भवन, कांदिवली में जैन संस्कार विधि से शुभारंभ हुआ।

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के अध्यक्ष विनोद बोहरा ने विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानकारी अवगत करवाई।

संस्कारक सौरभ दुधोड़िया एवं पारस दुगड़ ने जैन संस्कार विधि से शुभारंभ करवाया।

इस अवसर पर आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, मुंबई के महामंत्री सुरेंद्र कोठारी, मुंबई सभा के कार्याध्यक्ष नवरतन गन्ना सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित थे।

ज्ञानशाला कार्यक्रम का आयोजन

भीम।

तेरापंथ महासभा के निर्देशन में तेरापंथी सभा एवं ज्ञानशाला भीम के तत्त्वावधान में ज्ञानशाला में अध्ययनरत बच्चों द्वारा तेरापंथ सभा भवन में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तेरापंथ सभा के अध्यक्ष गोकुलचंद मुणोत तेरापंथ सभा के भवन निर्माण समिति के मिश्रीलाल गन्ना सहित अनेक पदाधिकारियों की उपस्थिति में कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत कन्या मंडल की बालिकाओं द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति से हुआ।

कार्यक्रम को ज्ञानशाला संयोजक भरत हिंगड ने ज्ञानशाला के बारे में विस्तृत जानकारी दी। कन्या मंडल की बालिकाओं ने दो दिन के प्रयास से ३० से अधिक बच्चों को कार्यक्रम की प्रस्तुतियाँ सिखाकर एक सुंदर कार्यक्रम का आयोजन किया। बच्चों को पारितोषिक समाजसेवी मिश्रीलाल गन्ना द्वारा किया गया। कार्यक्रम में पदाधिकारियों, सदस्यों सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 - 25 सितंबर, 2022

✦ *व्यक्तियों के समूह से समाज का निर्माण होता है, इसलिए समाज व्यक्ति से बड़ा होता है। एक व्यक्ति के चिंतन की तुलना में समाज अथवा संगठन का चिंतन महत्त्वपूर्ण होता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

ज्ञानशाला के विविध आयोजन

दक्षिण मुंबई

शासनश्री साध्वी सोमलता जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस मनाया गया। इस अवसर पर फ्रीडम फाईटर फेंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन भी हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत में रैली का आयोजन किया गया, जिसमें बच्चे, प्रशिक्षक, युवक परिषद के सदस्य, महिला मंडल की सदस्या एवं अभिभावकों ने भाग लिया।

सभी का स्वागत प्रशिक्षिका विजय डागलिया ने किया। बच्चों ने अनेक मनमोहक प्रस्तुतियाँ दी। प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में दक्षिण मुंबई तेयुप से राहुल मेहता एवं कन्या मंडल संयोजिका रुचि बोरदिया की उपस्थिति रही।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष गणपत डागलिया, आचार्य महाप्रज्ञ विद्या निधि फाउंडेशन के ट्रस्ट से इंद्रमल धाकड़, कार्याध्यक्ष कुंदनमल धाकड़, दक्षिण मुंबई तेयुप अध्यक्ष नितेश धाकड़ सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। प्रशिक्षिका आशा कच्छारा ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन प्रशिक्षिका रेणु बोलिया ने किया।

● शासनश्री साध्वी सोमलताजी के सान्निध्य में दक्षिण मुंबई ज्ञानशाला के संपर्क पखवाड़े के अंतर्गत अभिभावकों की संगोष्ठी रखी गई। बच्चों ने कंठस्थ ज्ञान की कई प्रस्तुतियाँ दीं। स्वागत वक्तव्य प्रशिक्षिका विजयश्री डागलिया ने किया। साध्वी सोमलता जी ने अभिभावकों को बच्चों को ज्ञानशाला में भेजने एवं स्वयं का आध्यात्मिक विकास करने की प्रेरणा प्रदान की। सभा के अध्यक्ष गणपत डागलिया ने अभिभावकों को जागरूक होने के लिए प्रोत्साहित किया। अभिभावकों के लिये गेम्स का आयोजन किया गया। प्रशिक्षिका रेखा बरलोटा ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन प्रशिक्षिका आशा कच्छारा ने किया। व्यवस्था में ज्ञानशाला परिवार से रेणू बोलिया, आशा पोरवाल, सुमन नाहर, मोनिका सिंघवी, निर्मला पोरवाल, प्रदीप ओस्तवाल का विशेष सहयोग रहा। इस संगोष्ठी के उपरांत प्रशिक्षिकों ने घर-घर जाकर और वीडियो कॉल के माध्यम से संपर्क कर नए ज्ञानार्थियों को जोड़ा। जिसमें मुंबई ज्ञानशाला की आंचलिक सहसंयोजिका राजश्री कच्छारा का विशेष सहयोग रहा।

माधावरम्

मुनि सुधाकर कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रथम चरण में प्रातःकालीन रैली का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के द्वितीय चरण का शुभारंभ मुनिश्री के नमस्कार महामंत्रोच्चार तथा व्यासरपाड़ी-मनली ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों के संयुक्त मंगलाचरण से हुआ।

मुनि सुधाकर जी ने कहा कि संस्कारों की विरासत धन की विरासत से अधिक मूल्यवान है। उसका संरक्षण और संवर्द्धन करना हर व्यक्ति का परम कर्तव्य है। परिवार और समाज का भविष्य संस्कारों की संपति से ही सुरक्षित रहता है। मुनि नरेश कुमार जी ने गीतिका का संगान किया।

तेरापंथ ट्रस्ट माधावरम् के अध्यक्ष धीसूलाल बोहरा ने सभी का स्वागत किया। ज्ञानशाला आंचलिक संयोजक अनिता चोपड़ा ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

मुख्य कार्यक्रम का संयोजन कविता मेड़तवाल व नीलम आच्छा ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रशिक्षिकाओं को राष्ट्रध्वज का वितरण प्यारेलाल पितलिया ने किया। सभी ज्ञानार्थियों को माणकचंद रांका व तेयुप चेन्नई अध्यक्ष विकास कोठारी द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर किल्पाक, मनली, व्यासरपाडी, अम्बत्तूर, पल्लावरम्, मिंजूर, माधावरम्, वडपलनी, ताम्बरम्, पेरंबूर व विल्लीवाक्कम् ज्ञानशालाओं से लगभग १८० ज्ञानार्थियों व ६० प्रशिक्षिकाओं सहित अनेक ज्ञानशाला कार्यकर्ता उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन भरत मरलेचा ने किया।

कांटाबाजी

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में मुनिश्री ने कहा कि जीवन में आगे बढ़ते रहना चाहिए। ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप से स्वयं का आध्यात्मिक विकास होता है। ज्ञानशाला में ज्ञानार्थी का अनेक तरह से विकास होता है।

अर्हम गीत से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षक स्मिता जैन ने प्रस्तुति दी। ज्ञानार्थी वर्धमान ने ज्ञानशाला के अनुभव सुनाए। अनुशासन में पुण्य कवाड एवं सौम्या जैन, गणवेश में रेहांश एवं युक्ति जैन, उपस्थिति में अक्षत एवं वैष्णवी, जागरूक अभिभावक में वंदना, प्रियंका दीपक जैन, अंकिता आशीष जैन, ज्योति हीरालाल जैन, प्रशिक्षक सपना युवराज जैन ने सर्वाधिक उपस्थिति में विजेता का खिताब प्राप्त किया।

कहानी प्रतियोगिता का संयोजन सपना जैन, देशभक्ति गीत प्रतियोगिता का संयोजन पूजा झरवालिया ने किया। आजादी का अमृत महोत्सव एवं मेरा प्यारा भारत विषय पर चित्रकला प्रतियोगिमा का आयोजन हुआ। जज संजय जैन एवं सुनीता जैन का साहित्य से सम्मान किया गया। संपूर्ण कार्यक्रम का संयोजन बॉबी जैन ने किया। आभार ज्ञापन पूजा जैन ने किया।

उदासर

शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में ज्ञानशाला का एक दिवसीय शिविर ''संस्कार निर्माण शिविर'' रखा गया। साध्वी शशिरेखा जी ने कहा कि सुंस्कारित बच्चे देश का उज्जवल भविष्य हैं, बचपन में जैसे संस्कार दिये जायेंगे वैसे ही आगे जाकर फलीभूत होंगे, कच्ची मिट्टी को चाहे जिस आकार में परिवर्तित किया जा सकता है। साध्वी रोहितप्रभाजी ने कार्यक्रम का संचालन किया व अभिभावकों से आग्रह किया कि अपने बच्चों के लिए जरूर समय निकालें।

कन्या मंडल, महिला मंडल द्वारा बच्चों को प्रशिक्षण दिया गया। सभा के अध्यक्ष हनुमान मल महनोत द्वारा आभार व्यक्त किया गया। इस अवसर पर साध्वी श्रीकांतप्रभा जी व साध्वी शीतलाप्रभा जी ने विचार रखे।

नालासोपारा

तुलसी जोन ज्ञानशाला की तेरापंथ भवन के प्रांगण में नमस्कार महामंत्र से शुरुआत की गई, स्वागत भाषण प्रशिक्षिका बहन मानसी मेहता ने किया। संपर्क पखवाड़ा की मीटिंग पेरेंट्स के साथ हुई जिसमें सभा के अध्यक्ष लक्ष्मी लाल मेहता व मंत्री पारस बाफना, तेयुप अध्यक्ष, किशन कोठारी, जितेश हिरण व महिला मंडल से संयोजिका वनीता सोलंकी आदि ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

उपासिका बहन प्रेमा धाकड़, मंजू बाफना, लक्ष्मी मेहता आदि की गरिमामय उपस्थिति रही। एवं प्राशिक्षिका प्रवीण खाब्या, संगीता ढालावत, मीना ढालावत, हेमा सोलंकी का विशेष सहयोग रहा।

इस अवसर पर भक्तामर एवं शिशु संस्कार के परितोषिक वितरण किए गए। मंजु बाफना उपासिका बहन ने संपर्क पखवाड़े के बारे में विस्तार से समझाया और इसे मनाया जाता है। उसके ऊपर विस्तार से प्रकाश डाला।

उपासिका बहन लक्ष्मी मेहता ने कहानी के माध्यम से बच्चों को मोटिवेट किया। कार्यक्रम का संचालक उपासिका बहन प्रेमा धाकड़ ने किया। आभार ज्ञापन प्राशिक्षिका बहन नीता कोठारी ने किया। पूरे समाज में सभी पदाधिकारियों एवं पूरे समाज से सराहनीय उपस्थिति रही।

अमरनगर

तेरापंथ भवन अमरनगर में ज्ञानशाला के वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया। शासनश्री साध्वी सत्यवती जी के सान्निध्य में आयोजित हुए इस कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा गीत के संगान से हुआ। मंगलाचरण ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों द्वारा गीत के संगान से हुआ।

स्वागत उद्बोधन सरदारपुरा ज्ञानशाला के संयोजक बी०आर० जैन द्वारा दिया गया। तत्पश्चात् सरदारपुरा ज्ञानशाला के ज्ञानर्थियों द्वारा प्रशिक्षिका श्रीमती समता सालेचा व श्रीमती ट्विंकल के निर्देशन में ''अध्यात्म की एबीसीडी'' पर सुंदर प्रस्तुति दी गयी। ज्ञानशाला विद्यार्थियों द्वारा वंदना, सामायिक, प्रतिलेखना आदि किस प्रकार होती है, उसका विधि सहित दृश्य रूपांकन किया गया।

ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा ''धर्म की शरण'' विषय पर नाटिका की प्रस्तुति दी गयी। तत्पश्चात् एबीसीडी पर आध्यात्मिक कविता की प्रस्तुति दी गयी। बच्चों द्वारा तेरापंथ के ११ आचार्यों के रूपों का दृश्यांकन किया गया। प्रेक्षा पारख के निर्देशन में ''अधूरे बचपन को संवारे ज्ञानशाला'' गीत पर नृत्य की प्रस्तुति दी गयी। मुख्य प्रशिक्षिका श्रीमती अर्चना बुरड़ के निर्देशन में ''ज्ञानशाला संस्कारों की शाला'' विषय पर प्रस्तुति दी गयी, जिसके माध्यम से चार कषायों से होने वाले नुकसान, अठारह पाप, कर्म बंधन आदि विषयों को सुंदर रूप से प्रस्तुत किया गया।

ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों व अभिभावकों को प्रेरणा प्रदान करते हुए शासनश्री साध्वीश्री ने कहा कि यह सभी अभिभावकों का कर्तव्य है कि बाल पीढ़ी ज्ञानशाला से अवश्य जुड़ें। ज्ञानशाला संस्कार निर्माण की शाला है जो बच्चों में संस्कारों के बीजारोपण में सहयोगी है। ज्ञानशाला गुरुदेव तुलसी का बोया बीज है, जो फलवान हो संस्कार निर्माण में सतत् योगभूत बन रहा है। साध्वीश्री ने स्वरचित कविता प्रस्तुत की।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तेरापंथी महासभा के पंचमंडल सदस्य दिलीप सिंघवी ने बाल पीढ़ी को संबोधित करते हुए अपने विचार प्रस्तुत किये। तेरापंथी सभा, तेयुप, तेमम द्वारा साहित्य व पचरंगा से दिलीप सिंघवी का सम्मान किया गया।

वार्षिकोत्सव कार्यक्रम के प्रायोजक परिवार श्रीमती कमलादेवी व मुकनचंद गाँधी मेहता की स्मृति में मुनेश कुमार, दिनेश कुमार, विशाल कुमार, सुकुन कुमार गांधी, मेहता परिवार का सम्मान जैन पंचरंगी व साहित्य द्वारा किया गया। सभा मंत्री महावीर चोपड़ा द्वारा ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं व ज्ञानर्थियों को पारितोषिक देकर सम्मानित किया गया।

कांदिवली

ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं का साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में "डालगणी जोन का वर्कशॉप' संपन्न हुआ। साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि ज्ञानशाला प्रशिक्षिकायें निःस्वार्थ भाव से संघ की सेवा कर रही हैं। यह समाज को आपका उपयोगी अवदान है। आज की कार्यशाला "Skill and inner abilities" को तराशने का एक उपक्रम है।

साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि ''स्किल प्राप्त होना ज्ञानवरणीय कर्मों का क्षयोपशम है। हर व्यक्ति की अर्हताएँ समान नहीं होती। पुरुषार्थ से व्यक्ति उनमें नया निखार पा सकता है। यह वर्कशॉप आपकी क्षमताओं को और तेजस्वी बनाए, यही अपेक्षा है।''

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। अशोक नगर ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने मंगल गीत की प्रस्तुति दी। डालगणी जोन की संयोजिका हेमलता मादरेचा ने सभी का स्वागत किया। बोरीवली ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने पढ़ाने के पुराने एवं नए तरीकों को लघु सारणी का सुंदर विवेचन किया। प्रश्नोत्तर के रोचक क्रम के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। मंच संचालन सह संयोजिका चंदा धाकड़ ने किया। धन्यवाद ज्ञापन उषा सिंघवी ने किया। चारकोप ज्ञानशाला को विशेष पुरस्कार मिला।

ठाणे

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी जिनरेखाजी एवं साध्वीवृंद के सान्निध्य में भारमल जोन ज्ञानशाला का कार्यक्रम आयोजित हुआ। मंगलाचरण डोंबिवली ज्ञानशाला द्वारा किया गया। 'हमारी ज्ञानशाला' विषय पर ठाणे ज्ञानशाला द्वारा प्रस्तुति दी गई। शासनश्री साध्वी जिनरेखाजी द्वारा प्रशिक्षिकाओं को अपने भीतर की प्रतिभा को पहचानने एवं ज्ञानशाला के विकास के बारे में प्रेरणा प्रदान की। साध्वीश्री द्वारा ज्ञानशाला प्रशिक्षक बहनों को प्रश्न उत्तर पूछे गए। समय सारणी मुंबई आध्यात्मिक टीम से नीता मेहता एवं सुमन नवलखा द्वारा बताई गई।

आभार ज्ञापन भिवंडी ज्ञानशाला से शर्मिला बाफना द्वारा किया गया। कार्यशाला का संचालन निशा भटेवरा ठाणे ज्ञानशाला द्वारा किया गया।

आत्मा के आसपास

❑ आचार्य तुलसी ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

वृत्तियों का शोषण : विचारों को पोषण

हम संज्ञा कहें या वृत्ति, हमारा काम होना चाहिए। इन चारों वृत्तियों में आहार और निद्रा प्राणी के लिए प्राण भी हो सकते हैं और प्राणहर भी। इनके बिना किसी का काम नहीं चलता, इस दृष्टि से ये प्राण हैं। छोटा प्राणी हो या बड़ा, मजदूर हो या मालिक, साधु हो या तीर्थंकर, भोजन की जरूरत सभी को रहती है। भोजन के प्रसंग में विवेक न हो तो वही तालपुट जहर बन जाता है। दशवैकालिक सूत्र में कहा–

विभूसा इत्थिसंसग्गी, पणीयरस-भोयणं।
नरस्सत्तगवेसिस्स विसं तालउडं जहा।।

–विभूषा, स्त्रीसंसर्ग और प्रणीत रसवाला भोजन आत्मा की खोज में निकले हुए व्यक्ति के लिए, शीघ्रघाती जहर के समान है। साधक ऐसे गरिष्ठ भोजन का परिहार करे, जो उसकी साधना में विघ्न उपस्थित करता है।

आहार के बाद दूसरी वृत्ति है–नींद। नींद न आए तो व्यक्ति बीमार हो जाता है। अच्छी नींद स्वास्थ्य का लक्षण है। स्वास्थ्य साधना में सहायक तत्त्व है। स्वास्थ्य के लिए भोजन और नींद दोनों का विवेक आवश्यक है। क्योंकि एक नींद ऐसी भी है, जिसका नाम है 'स्त्यानर्द्धि'। स्त्यानर्द्धि निद्रा एक गहरी मूर्च्छा की स्थिति है। यह नींद जिस व्यक्ति को आती है, उसे निश्चित रूप से नरकगामी माना गया है। यह निद्रा साधना में तो बाधक है ही, इससे चेतना पर मूर्च्छा की इतनी गहरी तहें जम जाती हैं कि अस्तित्व-बोध भी कठिन हो जाता है। इस दृष्टि से यह तथ्य स्पष्ट है कि आहार और निद्रा साधना में साधक भी हैं और बाधक भी।

जिस व्यक्ति की साधना परिपक्व हो जाती है, जो प्रारंभिक स्टेजों को पार कर ऊपर चढ़ जाता है, वह प्रतिकूल भोजन को भी अनुकूल बना सकता है। जहर को अमृत बनाने की बात हम सुनते हैं, यह केवल कल्पना नहीं है। साधना से ऐसी शक्ति अर्जित की जा सकती है जो जहर को अमृत में रूपायित कर देती है, आग को पानी बना देती है। जब तक ऐसी शक्ति प्राप्त नहीं होती है, तब तक विवेक-चेतना के द्वारा ही समस्या का समाधान करना होगा।

प्रश्न यह है कि विवेक-चेतना का विकास कैसे हो? इस संबंध में गहराई से सुनने, समझने, प्रयोग करने और अनुभव करने से विवेक जागता है। पर कठिनाई यह है कि आज खाना ही सब कुछ हो गया है। जिन लोगों को घर में बना भोजन रुचिकर नहीं लगता है या घर में बनाने की व्यवस्था नहीं होती है, वे होटलों में जाकर खाते हैं। अवकाश के दिन तो सामूहिक रूप से होटल में खाने की परंपरा बढ़ रही है। वह भोजन जीभ को स्वादिष्ट लग सकता है, पर उसे खाने वाले व्यक्ति यह नहीं सोचते कि यह भोजन बना कैसे है? और इसे बनाने वाले कौन हैं? इसमें किन पदार्थों को काम में लिया गया है? यह कैसे वातावरण में बना है? इसका परिणाम क्या आएगा? आदि। भोजन के संदर्भ में इन सब बिंदुओं पर गहराई से विचार किया जाए और खाद्य-संयम का प्रयोग होता रहे तो बहुत बड़ी समस्या का समाधान निकल सकता है।

भीड़ में भी अकेला

साधक अकेला रहे या समूह में? यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। इस प्रश्न का समाधान आगम के आलोक में यह मिलता है–'एत्थ दो नया निच्छयनओ ववहारनओ य।' किसी भी विवादास्पद प्रश्न को एक ही कोण से देखने पर समाधान नहीं मिलता। समाधान की अनेक दिशाएँ हैं। कम-से-कम दो दिशाएँ हैं–निश्चय और व्यवहार। निश्चयनय एक सचाई है। इसके अनुसार व्यक्ति अकेला आता है, अकेला जाता है, अकेला सुख-दुःख का भोग करता है और अकेला ही साधना करता है। इस भावना का प्रतिनिधित्व करने वाला एक राजस्थानी दोहा–

आप अकेला अवतरै मरै अकेला होय।
यूं कबहू इण जीव रो साथी सगो न कोय।।

यह वास्तविकता है। इस सच्चाई को भूलने से बहुत बड़ी दुविधा उत्पन्न हो जाती है। कोई व्यक्ति यह सोचे कि मेरे बिना उसका काम नहीं चलता या उसके बिना मेरा काम नहीं चलता, यह उसका मानसिक भ्रम है। सच्चाई यह है कि किसी का काम किसी के बिना रुका नहीं रहता। जन्म और मृत्यु का प्रवाह बहता है। हर व्यक्ति इस प्रवाह में बहकर अदृश्य हो जाता है और संसार का काम ज्यों-का-त्यों चलता रहता है। फिर यह रात-दिन की चिंता और बेचैनी क्यों? एकत्व अनुप्रेक्षा का विस्मृत कर देने से यह परेशानी खड़ी होती है। वास्तव में व्यक्ति स्वयं का स्वामी है। इसलिए वह अकेला रहना सीखे और अकेला जीना सीखे। शक्तिशाली व्यक्ति सदा ही अकेला रहता है। जंगल का शेर कब सोचता है–

एको ऽहमसहायो ऽहं, कृशो ऽहमपरिच्छदः।
स्वप्ने ऽप्येवंविधा चिंता कि मृगेन्द्रस्य जायते?

– मैं अकेला हूँ, असहाय हूँ, कृश हूँ, मेरा कोई परिवार नहीं है, इस प्रकार की चिंता सिंह को कभी स्वप्न में भी होती है क्या?

शेर भी एक प्राणी है और मनुष्य भी एक प्राणी है। मनुष्य क्या शेर से कम शक्तिशाली है? वह अनंत शक्तिशाली है। इसलिए उसे अकेलेपन का भय कभी होना ही नहीं चाहिए।

संत इकहार्ट जंगल में किसी वृक्ष के नीचे शांत भाव से बैठा था। उसका कोई पुराना मित्र उधर से गुजरा। उसने देखा इकहार्ट अकेला बैठा है। वह उसके पास जाकर बैठ गया और बोला–'शायद आप अकेले बैठे-बैठे ऊब रहे हैं, यह सोचकर मैं आपके पास आया हूँ।' संत बोला–'भाई! मैं अकेला कहाँ था? मैं तो अपने साथ था। मेरा प्रभु मेरे साथ था। तुमने आकर मुझे अकेला कर दिया। अब मेरा मैं अर्थात् मेरा प्रभु मुझसे छूट गया।' कितना गहरा रहस्य है इस अभिव्यक्ति में? इस रहस्य को वे ही समझ सकते हैं जो अकेले जीने की कला जानते हैं। समूह में बंधा हुआ व्यक्ति न तो इस रहस्य को समझ पाता है और न अकेलेपन के सुख का अनुभव कर सकता है।

एकत्व भावना की अनुप्रेक्षा करने से द्वैत से उभरने वाली समस्या का समाधान हो सकता है। इस संदर्भ में आगम की एक कहानी है, जो बहुत प्रेरक है–

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(६१)

सिहरन पैदा कर दी जिसने सब प्राणों में
स्वर छेड़ा वह तुमने इस धरती-अम्बर में
घिरी हुई गमगीन निशाओं की मायूसी
हरने आए दिव्य मशालें थामे कर में।।

हर मानव की पीर मिटाना लक्ष्य तुम्हारा
अश्रु पोंछने आँखों के तुम आगे आए
मन की आहों ने आश्वासन पाया तुमसे
पूरा करने सब चाहों को कदम बढ़ाए
रही अधूरी अंतहीन वे आकांक्षाएँ
जो इतराती भौतिकता की लहर-लहर में।।

नहीं समझ पाते जो गूढ़ अर्थ पूजा का
धूप दीप फल फूल चढ़ाकर खुश हो जाते
दरवाजे पर खड़े देव को ओझल करके
सूनी-सी राहों में अपने नयन बिछाते
बेहोशी में लगी बीतने विवश जिंदगी
अलख जगाई दिव्य चेतना की घर-घर में।।

झूम उठा माटी का पुतला मानव तुम पर
हर दर्दी की पीड़ा को तुमने सहलाया
किया कुहासे ने बंदी उजली किरणों को
तम को हरने तुमने ही आलोक बिछाया
धन्य हुआ तुमको पाकर कुदरत का कण-कण
अभिवंदन कर रही देवते! नश्वर स्वर में।।

(६२)

मंजिल और मार्ग की विस्मृति मनुज हुआ गुमराह।
तभी तुम्हारे युग चरणों से निकली सीधी राह।।

रवि को आच्छादित करते रजकण अम्बर में छाह
पग-पग पर तीखी शूलें पाकर राही घबराए
देख सघनता जंगल की जब मंद हुआ उत्साह।।

सागर के तल तक जा मैंने देखा दृश्य अनोखा
लहरों का आघात अनवरत मिला न तट का मौका
खोजे सो पाए सुन मन में जागी नूतन चाह।।

रत्नों के हैं ढेर वहाँ पर न पारखी आँखें
छूनी हैं नभ की बुलंदियाँ पास नहीं पर पाँखें
क्या करना अब मुझे देवते! तुम दो उचित सलाह।।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 - 25 सितंबर, 2022

✦ *भावक्रिया, प्रतिक्रियाविरति, मैत्री, मिताहार, मितभाषण– प्रेक्षाध्यान की उपसंपदा के ये पाँच सूत्र जीवन में आ जाते हैं तो स्वस्थ जीवनशैली के महत्त्वपूर्ण सूत्र हस्तगत हो जाते हैं।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

तेरांपथ समाज के मानव सेवा में दिग्गज हस्तियों का मिला व्यापक समर्थन

श्री जगदीप धनकड़ -उपराष्ट्रपति, भारत

श्री मनसुख मंडाविया -स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्री

श्री ऋषिकेश पटेल
गुजरात के स्वास्थ्य मंत्री

डॉ. सी.पी. जोशी
विधानसभा अध्यक्ष -राजस्थान

श्रीमती नीमा बेन आचार्य
विधानसभा अध्यक्ष -गुजरात

श्री जगत प्रकाश नड्डा
राष्ट्रीय अध्यक्ष -भाजपा

योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री -उत्तरप्रदेश

श्री एस गुरमीत हायर
कैबिनेट मंत्री -पंजाब

श्रीमती सावित्री जिंदल
पूर्व मंत्री -हरियाणा

श्री गौतम जी चौरडिया
न्यायाधीश, छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट

श्री तार किशोर प्रसाद
पूर्व उप-मुख्यमंत्री, बिहार

डॉ. सर्वेश्वर नरेंद्र भुरे
कलेक्टर, रायपुर

श्री प्रशान्त अग्रवाल
एस.एस.पी. रायपुर

श्रीमती विद्या जयप्रकाश ठाकूर
राज्यमंत्री महाराष्ट्र

डॉक्टर एस.के.बिंझवार
छत्तीसगढ़ एड्स नियंत्रण सोसाइटी, रायपुर

श्री ऋषिकेश उपाध्याय
पुलिस अधीक्षक S.P

सुश्री शिखा जैन
एडिशनल ट्रेजरी ऑफिसर

श्री संजय शर्मा
एआईजी, यातायात -छ.ग.

Globally Supported by:
Jaishree Cotton Mills
कोठारी अशोककुमार, कैलाशचंद्र, नितिनकुमार, अंकुरकुमार तातेड़
जसोल मदुरै सूरत पाली ईरोड
मानव हैं मानवता में प्राण भरें, आओ संकल्पित हो रक्तदान करें

Empowered By:
OLD UNION
THANGA HOUSE
ANTISPOT

Powered By:
Lalwani Ferro Alloys Ltd

Promoted By:
BIKAJI

तेरांपथ समाज के मानव सेवा में दिग्गज हस्तियों का मिला व्यापक समर्थन

श्री भागीरथ चौधरी
सांसद -अजमेर

रेड क्रॉस ब्लड बैंक सोसायटी
सदस्य

श्री सुनील कुमार बंसल
डायरेक्टर जनरल ऑफ़ पुलिस-ओड़िसा

श्रीमती संगीता बेन पाटिल
विधायक-लिंबायत

श्री परशुरामजी
पुलिस कमीशनर -चित्रदुर्गा

श्री रोहन कुमार झा
उपायुक्त -सिलचर जिला

सुश्री आकांक्षा गोदारा
-तहसीलदार पीलीबंगा

श्री पुष्पेंद्र जी मीणा
कलेक्टर -दुर्ग

श्री रमनदीप कौर
पुलिस अधीक्षक, सिलचर

श्री कुलभूषण गोयल
पंचकुला -मेयर

श्री अमितेश कुमार
पुलिस कमिश्नर -नागपुर सिटी

श्री सुखचैन सिंह रमाना
-चेयरमैन पीलीबंगा नगरपालिका

श्री दत्तात्रेय थोपटे
वरिष्ठ पोलीस निरीक्षक गोरेगाव

श्री कोइराला
-पुलिस अधीक्षक, नेपाल

श्री राजकुमार लामिछाने
-अधीक्षक, नेपाल सशस्त्र बल

श्री बुद्ध श्रेष्ठ
निरीक्षक स. पुलिस बल, भारतनेपाल सीमा

प्रो. अंकु मोनी सैकिया
-प्रिंसिपल, धुबड़ी मेडिकल कॉलेज

श्री देबामोय सान्याल
धुबड़ी म्युनिसिपल बोर्ड-अध्यक्ष

परम आराधिका मंजु बाईसा
श्री बाबोसा धाम -चुरू

श्री बच्चन सिंह 'सरल'
गुरुद्वारा, सिक्ख संगत, हावड़ा -अध्यक्ष

17 सितम्बर 2022 को अभातेयुप रक्तदान का एक नया इतिहास रचने जा रही है, जिसमें 1000 से अधिक रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जाएगा। अपेक्षित है कि सभी लोग उस दिन अपनी औद्योगिक इकाईयों, व्यवसायिक प्रतिष्ठानों, अपने संपर्क के व्यापारिक संगठनों के माध्यम से रक्तदान शिविरों का आयोजन करवा कर मानवता के इस यज्ञ में अपनी आहुती प्रदान करें। कृपया रक्तदान शिविर रजिस्ट्रेशन के लिए या अन्य किसी जानकारी के लिए www.mbdd.in पर लॉगिन करें।

www.facebook.com/megablooddonationdrive | www.twitter.com/iMdonatingBlood | abtyp-mbdd | www.mbdd.in

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 - 25 सितंबर, 2022

✦ *आत्मा की शुद्धि होने पर जो आनंद मिलता है, वह भी सुख है तथा बाह्य वस्तुओं से भी सुख की प्राप्ति हो सकती है। एक आध्यात्मिक सुख है तो दूसरा भौतिक सुख है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

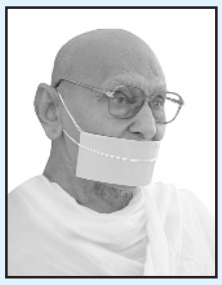

संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(१६) नयदृष्टिरनेकांतः स्याद्वादस्तत्प्रयोगकृत्।
विभज्यवाद इत्येष, सापेक्षो विदुषां मतः।।

(क्रमशः) नय का उद्देश्य यह है कि हम दूसरे के विचारों को उसी के अभिप्राय के अनुकूल समझने का प्रयत्न करें तभी हमें उसके कथन की सापेक्षता का ज्ञान होगा। अन्यथा हम उसे समझ नहीं सकेंगे। नय सात हैं–

नैगमनय–द्रव्य के सामान्य-विशेष के संयुक्त रूप से निरूपण करने वाला विचार।

संग्रहनय–केवल सामान्य का निरूपण करने वाला विचार।

व्यवहारनय–केवल विशेष का निरूपण करने वाला विचार।

ऋजुसूत्रनय–वर्तमानपरक दृष्टि। जैसे–तुला उसी समय तुला है जब उससे तोला जाता है। अतीत और भविष्य में तुला तुला नहीं है।

शब्दनय–भिन्न-भिन्न लिंग, वचन आदि के आधार पर शब्द के भिन्न-भिन्न अर्थ स्वीकार करता है। जै-पहाड़ का जो अर्थ है वह पहाड़ी शब्द व्यक्त नहीं कर सकता।

समभिरूढ़नय–इसका अभिप्राय यह है कि जो वस्तु जहाँ आरूढ़ है, उसका वहीं प्रयोग करना चाहिए। स्थूलदृष्टि से घट, कुट, कुंभ का अर्थ एक है। परंतु समभिरूढ़नय इसे स्वीकार नहीं करता। वह सब शब्दों में अर्थभेद मानता है।

एवंभूतनय–वार्तमानिक या तत्कालभावी व्युत्पत्ति से होने वाली शब्द की प्रवृत्ति का आशय। जैसे घट उसी समय घट है जो मस्तक पर पानी लाने के लिए रखा हुआ है। घट शब्द भी वही है जो घट-क्रियायुक्त अर्थ का प्रतिपादन करे।

नैगमनय ज्ञानाश्रयी विचार है। जो संकल्प प्रधान होता है वह ज्ञानाश्रयी है। अर्थाश्रयी विचार वह होता है जो अर्थ को मानकर चले। संग्रहनय, व्यवहारनय और ऋजुसूत्रनय–ये तीनों अर्थाश्रयी विचार हैं। शब्दनय, समभिरूढ़नय और एवंभूतनय–ये तीनों शब्दाश्रयी विचार हैं।

इनके आधार पर नयों की परिभाषा यों हो सकती है–

(१) नैगम–संकल्प या कल्पना की अपेक्षा होने वाला विचार।
(२) संग्रह–समूह की अपेक्षा से होने वाला विचार।
(३) व्यवहार–व्यक्ति की अपेक्षा से होने वाला विचार।
(४) ऋजुसूत्र–वर्तमान अवस्था की अपेक्षा से होने वाला विचार।
(५) शब्द–यथाकाल, यथाकारक शब्द प्रयोग की अपेक्षा से होने वाला विचार।
(६) समभिरूढ़–शब्द ही उत्पत्ति के अनुरूप शब्द प्रयोग की अपेक्षा से होने वाला विचार।
(७) एवंभूत–व्यक्ति के कार्यानुरूप शब्द प्रयोग की अपेक्षा से होने वाला विचार।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

धर्म बोध

शील धर्म

प्रश्न ७ : क्या पाँचों महाव्रतों का पालन युगपत् करना पड़ता है?

उत्तर : पाँचों महाव्रतों को एक साथ ग्रहण करना पड़ता है, वैसे ही उनका पालन भी युगपत् रूप से करना पड़ता है। जो एक महाव्रत को भंग करता है वह सबको भंग करता है। आचार्य भिक्षु ने इस तत्त्व को निम्नोक्त उपनय से इस प्रकार समझाया है–

'एक भिखारी को पाँच रोटी जितना आटा मिला। वह रोटी बनाने बैठा। उसने एक रोटी पकाकर चूल्हे के पीछे रख दी। दूसरी रोटी तवे पर सिक रही थी। तीसरी अंगारों पर थी। चौथी रोटी का आटा उसके हाथ में और पाँचवीं रोटी का आटा कठौती में था। एक कुत्ता आया और कठौती से आटे को उठा ले गया। भिखारी उसके पीछे दौड़ा। वह ठोकर खाकर गिर पड़ा। उसके हाथ में जो एक रोटी का आटा था, वह गिरकर धूल-धूसरित हो गया। वापस आया, इतने में चूल्हे के पीछे रखी रोटी बिल्ली ले गई। तवे की रोटी तवे पर ही जल गई। अंगारों पर रखी हुई रोटी जलकर खत्म हो गई। एक रोटी का आटा जाने से बाकी चार रोटियाँ भी चली गईं। कदाचित् एक रोटी के नष्ट होने पर अन्य रोटियाँ नष्ट न भी हों, पर यह सुनिश्चित है कि एक महाव्रत के भंग होने पर सभी महाव्रत भंग हो जाते हैं।' यही तथ्य आगमों में भी वर्णित है–'ब्रह्मचर्य आदि किसी एक महाव्रत के भंग होने पर भी महाप्रत भंग हो जाते हैं, पर्वत से गिरी हुई वस्तु की भाँति टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं।'

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य हेमचंद्र

राज्यारोहण के बाद कुमारपाल ने राज्य की स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए सपादलक्ष देश के उद्धत नरेश अर्णोराज पर ग्यारह बार आक्रमण किया। हर बार उसे असफलता प्राप्त हुई। मंत्री वाहड़ की सलाह से जैन धर्म की शरण स्वीकार कर बारहवीं बार उसने अर्णोराज पर आक्रमण किया। इस युद्ध में वह विजयी बना। यह समय वी०नि० १६७७ (वि० १२०७) के आसपास बताया गया है। प्रस्तुत घटना-प्रसंग से नरेश की धार्मिक आस्था जैनधर्म के प्रति और अधिक दृढ़ हो गई। अर्णोराज पर विजय प्राप्त करने के बाद नरेश कुमारपाल हेमचंद्राचार्य की सन्निधि में पहुँचा। हेमचंद्राचार्य ने नरेश को अनेक अहिंसा प्रधान जीवनोपयोगी शिक्षाएँ दीं। उनकी शिक्षाओं से प्रभावित होकर नरेश ने मांसाहार-परिहार आदि कई नियम लिए।

नरेश कुमारपाल करुणार्द्र हृदय था। हेमचंद्राचार्य के संपर्क ने उसे अध्यात्मोन्मुख बना दिया था। उस समय पूर्वजों से चली आ रही राजपरंपरा के अनुसार पति वियुक्ता महिला का समग्र धन राजपुरुषों द्वारा ग्रहण कर उसे राजकोष में पहुँचा दिया जाता था। नरेश कुमारपाल ने इस विधान को अवैध बताया और अमान्य ठहराया। पुत्रहीना, दीना, दुःखिता, विधवा महिला के धन को अग्रहणीय घोषित कर कुमारपाल ने साहस के साथ जिस स्वस्थ नीति और स्वस्थ परंपरा की स्थापना की, वह जैनधर्म में प्रतिपादित अभय, अहिंसा और अपरिग्रह की दिशा में श्रेष्ठ कदम था।

आचार्य हेमचंद्र का बढ़ता प्रभाव कइयों के लिए असह्य हो गया। एक दिन कुमारपाल से कुछ व्यक्तियों ने कहा–'हेमचंद्र अपने ही इष्टदेव की आराधना करता है और मत को श्रेष्ठ समझता है। इतरदेव को महत्त्व प्रदान नहीं करता।' उदारमना कुमारपाल को यह बात अखरी। एक दिन नरेश ने हेमचंद्र को सोमेश्वर की यात्रा में चलने के लिए कहा। प्रत्युत्तर में हेमचंद्र तत्काल अपनी स्वीकृति प्रदान करते हुए बोले–'राजन! भूखे आदमी को आग्रहपूर्वक निमंत्रण देने की बात ही कहाँ है। हम मुनिजनों के लिए तीर्थाटन प्रमुख है। इस कार्य के लिए मैं सहर्ष तैयार हूँ।' राजा ने सुखपाल आदि वाहन का प्रयाग करने के लिए कहा, पर आचार्य हेमचंद्र ने इस सुविधा का आश्रय नहीं लिया। वे बोले–'राजन! पदयात्रा के द्वारा ही तीर्थों के पुण्य का लाभ प्राप्त करेंगे।'

सोमेश्वर के मंदिर में पहुँचकर हेमचंद्राचार्य ने श्लोकों के द्वारा शिव की स्तुति की।

भवबीजांकुरजनना रागाद्याः क्षयमुपागता यस्य।
ब्रह्मा वा विष्णुर्वा, हरो जिनो वा नमस्तस्मै।।

भव बीज को अंकुरित करने वाले राग-द्वेष पर जिन्होंने विजय प्राप्त कर ली है, भले वे ब्रह्मा, हरि और जिन किसी भी नाम से संबोधित होते हों, उन्हें मेरा नमस्कार है।

महारागो महाद्वेषो, महामोहस्तथैव च।
कषायश्च हतो येन, महादेवः स उच्यते।।

जिनने महाराग, महाद्वेष, महामोह और कषाय को नष्ट किया है, वही महादेव है।

हेमचंद्राचार्य के योग से कुमारपाल अध्यात्म की ओर अग्रसर होता गया। वह अपने जीवन में सातों व्यसनों से मुक्त हो गया था। नवरात्रि आदि के उत्सव-प्रसंगों पर उसने पशुवध पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाए एवं नागरिकजनों को व्यसन परिहार हेतु निर्देश दिए। कुमारपाल ने अपने अधीनस्थ अठारह देशों में चौदह वर्ष तक के लिए अमारि की घोषणा करवाई। वह स्वयं विक्रम संवत् १२१६ में मृगसर शुक्ला द्वितीया के दिन सम्यक् रत्न को स्वीकार कर बारह व्रतधारी श्रावक बना था।

समय-संकेत

कलिकालसर्वज्ञ आचार्य हेमचंद्र की कुल आयु चौरासी वर्ष की थी। संयम-साधना के छिहत्तर वर्ष के काल में तिरसठ वर्ष तक आचार्य पद का दायित्व कुशलतापूर्वक वहन किया। आचार्य हेमचंद्र का स्वर्गवास वी०नि० १६९९ (वि० १२२६) गुजरात प्रांत में हुआ।

आचार्य हेमचंद्र का युग जैनशासन के महान् उत्कर्ष का युग था।

(क्रमशः)

टीपीएफ के विविध आयोजन

टीपीएफ के कार्यक्रम वूमेन हेल्थ सेमिनार का आयोजन

भीलवाड़ा।

डॉ० साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में टीपीएफ के तत्त्वावधान में वूमेन हेल्थ सेमिनार का आयोजन हुआ। डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि पहला सुख निरोगी काया। हमारा स्वास्थ्य हमारे हाथों में है, स्वास्थ्य की गारंटी भगवान के हाथ में नहीं, हमारे हाथ में है जो स्वस्थ रहना चाहते हैं वो अपने जीवन में पाँच टिप्स अपनाएँ– आहार का संयम, आसन-प्राणायाम, ध्यान, मॉर्निंग वॉक, हैप्पी मूड।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। टीपीएफ गीत का संगान किया गया। कार्यक्रम में राकेश सुतरिया टीपीएफ अध्यक्ष ने सभी का स्वागत किया। डॉ० विनीता जैन, मैनेजिंग डायरेक्टर ऋषभ हॉस्पिटल माँ एंड बेबी केयर ने विस्तार से वूमेन हेल्थ के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम में साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया। इस अवसर पर पदाधिकारियों सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। सोनल मारू ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन ब्रांच मंत्री रीना बाफना ने किया।

नारी घर की फुलवारी

हैदराबाद।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में टीपीएफ के तत्त्वावधान में 'नारी घर की फुलवारी' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ।

टीपीएफ राष्ट्रीय सहमंत्री ऋषभ दुगड़ ने सभी का स्वागत किया।

इस अवसर पर साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि नारी घर की फुलवारी है। नारी के बिना घर घर नहीं रहता है। इस घर की फुलवारी को हरा-भरा रखने के लिए जरूरी है इसमें सहिष्णुता की खाद हो। एक-दूसरे के प्रति हमदर्दी होनी चाहिए। हमदर्दी एक ऐसा गुण है जो पराए को भी अपना बना देती है।

साध्वी कल्पयशा जी ने कहा कि आज की नारी विकास के नए-नए परचम फहरा रही है। खेल का मैदान हो या खुला आसमान हर जगह नारी अपने हौंसलों को बुलंद कर रही है। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कल्पयशा जी ने किया। कार्यक्रम में टीपीएफ के कई सदस्यों की उपस्थिति रही। टीपीएफ से कार्यक्रम संयोजक दीपिका भंडारी एवं पूजा बोहरा थे।

तेममं अनीता गीड़िया ने सभी संस्थाओं की ओर से शुभकामनाएँ प्रेषित की। तेरापंथी सभा सिकंदराबाद अध्यक्ष बाबूलाल बैद, मंत्री सुशील बैद की उपस्थिति रही। टीपीएफ फेमिना द्वारा एक लघु नाटिका की प्रस्तुति दी गई।

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन

बीकानेर।

साध्वी कनकरेखा जी के सान्निध्य में तेममं के तत्त्वावधान में व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ परमेष्ठि स्तुति के साथ हुआ। महिला मंडल अध्यक्षा प्रेम नौलखा ने स्वागत किया। महिला मंडल की बहनों ने गीतिका प्रस्तुत की।

साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि वर्तमान युग का लोकप्रिय विषय है–व्यक्तित्व विकास। व्यक्तित्व की सही पहचान-उसका अपना जीवन दर्शन है। विनम्रता, सहिष्णुता, मधुर वाणी आदि पर्सेनेलिटी डेवलेपमेंट के पेरामीटर हैं। इसे हम अपने जीवन में अपनाएँ, शुभ भविष्य का निर्माण करें।

साध्वी अर्हतप्रभा जी ने कहा कि व्यक्तित्व विकास के साथ विकास की ऊँचाइयों को छूना हमारा लक्ष्य बने। हम संकल्पबद्ध हों, संकल्प-शक्ति के साथ सकारात्मक सोच की दिशा में अग्रसर हों, अनेकांत हमारे जीवन का परिपार्श्व बने। तभी हम अपने व्यक्तित्व को सुंदर बना सकते हैं।

यंग टेलेंट स्पीकर पूजाऋतु ने कहा कि सद्साहित्य, सत्संगति, सेल्फ डिसिप्लिन के साथ हम अपने करेक्टर को बेस्ट बनाएँ। महान पुरुषों को हम अपने जीवन का आदर्श बनाएँ। संघ और समाज की सेवा करें।

इस अवसर पर सभा, परिषद, महिला मंडल, किशोर मंडल, ज्ञानशाला सभी ने उत्साह के साथ भाग लिया। हुकमीचंद बोथरा ने अपने विचार रखे। महिला मंडल की ओर से मुख्य वक्ता पूजाऋतु का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री अंजु बोथरा ने किया।

आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम के आयोजन

कांटाबाजी

मुनि प्रशांत कुमार जी, मुनि कुमुद कुमार जी के सान्निध्य में १०२ वर्षीय श्राविका सोबाई जैन ने ध्वजारोहण किया। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि स्वतंत्रता दिवस हमारे देश के लिए गौरव का दिन होता है। पूरे राष्ट्र की एकता के लिए यह दिन हमारे लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। तेरापंथ सभा द्वारा एक १०२ वर्षीय महिला से ध्वजारोहण कराना हमें यह दर्शाता है कि भारत में बुजुर्ग का सम्मान किया जाता है।

विजयनगर

तेयुप द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव बैंगलोर से लगभग ११५ किलोमीटर दूर गर्वनमेंट हाईस्कूल सीबी में ध्वजारोहण करके धूमधाम से मनाया गया। तेयुप अध्यक्ष श्रेयांस गोलछा, उपाध्यक्ष विकास बांठिया, सहमंत्री संजय भटेवरा एवं ऋषभ बरड़िया ने शुभकामनाएँ प्रेषित की।

बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर तेयुप पूर्व अध्यक्ष महावीर टेबा, मंत्री राकेश पोखरणा, सहमंत्री कमलेश चोपड़ा ने किया। कार्यक्रम में ग्राम पंचायत अध्यक्ष, स्कूल प्रिंसिपल, अध्यापक तथा स्कूल स्टाफ उपस्थित थे। आभार ज्ञापन धीरज भादानी ने किया।

राजराजेश्वरी नगर

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में भारत के ७५वें स्वतंत्रता दिवस का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम शासनश्री साध्वीश्री जी ने मंगलाचरण सुनाकर ध्वजारोहण कार्यक्रम की शुरुआत की। ट्रस्ट अध्यक्ष मनोज डागा, सभा अध्यक्ष छतरसिंह सेठिया, तेयुप अध्यक्ष कौशलमल लोढ़ा, महिला मंडल अध्यक्षा लता बाफना एवं अन्य पदाधिकारीगण उपस्थित रहे।

साध्वी अमितरेखा जी ने स्वतंत्रता दिवस पर स्वयं द्वारा लिखित कविता का संगान किया। साध्वी अर्हमप्रभा जी ने भारत की आजादी का इतिहास बताया।

✦ *इस दुनिया में कोई स्थायी नहीं, सब राही हैं।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

भगवान पार्श्वनाथ निर्वाण कल्याणक दिवस के आयोजन

माधावरम्

भगवान पार्श्वनाथ निर्माण कल्याणक महोत्सव मुनि सुधाकर जी के सान्निध्य में जप-तप अनुष्ठान के साथ मनाया गया। जप अनुष्ठान में मुनि सुधाकर जी ने कहा कि भगवान पार्श्वनाथ जैन धर्म के तेईसवें तीर्थंकर हुए हैं, उनके लिए पुरुषादानिय विशेषण प्रयुक्त हुआ है। मंत्र शास्त्र में पार्श्वनाथ प्रमुख रहे हैं। उनकी स्तुति में जितने स्तोत्र लिखे गए हैं, शायद अन्य तीर्थंकरों की स्तुति में लिखे गए।

मुनि नरेश कुमार जी ने स्तवना का संगान किया। स्वागत स्वर श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ माधावरम् ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी घीसूलाल बोहरा ने किया। कार्यक्रम का संचालन कविता मेड़तवाल ने एवं मंगलाचरण मन्नली एरिया की बहनों ने किया। समारोह के प्रायोजक अकलकंवर मानकचंद रांका का सम्मान ट्रस्ट की ओर से किया गया। समारोह को सफल बनाने में जैन तेरापंथ नगर के कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा। धन्यवाद ज्ञापन प्रवीण सुराणा ने दिया।

राजाराजेश्वरी नगर

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में चमत्कारी 'उपसर्गहर स्तोत्र के सजोड़े जपानुष्ठान का आयोजन किया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि जैन धर्म के २३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति में आचार्य भद्रबाहु द्वारा रचित यह महाप्रभावक मंत्र है। आचार्य भद्रबाहु एक उत्तम कोटि के रचनाकार थे।

जपानुष्ठान में अच्छी संख्या में जोड़े सहित भाई-बहनों की उपस्थिति रही। अनुशासनबद्ध रूप में एक स्वर में समुपस्थित जन-समुदाय ने भक्ति विभोर होकर जप किया। तेरापंथ सभा के साथ महिला मंडल एवं तेयुप ने आयोजन में श्रम नियोजित किया।

साहुकारपेट

साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेममं के तत्त्वावधान में सामुहिक आयंबिल अनुष्ठान का आयोजन किया गया। भगवान पार्श्व के निर्वाण कल्याणक के अवसर पर आयोजित इस समारोह में साध्वीश्री जी ने कहा कि आयंबिल तप का महत्त्व जग विश्रुत है। आयंबिल प्राचीनकाल से ही उत्तम तप आराधना पद्धति रही है।

साध्वीश्री जी ने आयंबिल-तप का शारीरिक और वैज्ञानिक महत्त्व बताते हुए विस्तृत विवेचन किया।

साध्वीश्री जी द्वारा जैन शासन के अति प्रभावक पार्श्व-मंत्र के साथ आयंबिल अनुष्ठान करवाया गया। साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया। महिला मंडल, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका एवं ज्ञानशाला के बच्चों ने प्रभावक आचार्य हरिभद्रसूरि, मैनासुंदरी एवं द्वारिकानगरी के ऐतिहासिक प्रसंगों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी डॉ० चैतन्यप्रभा जी ने किया। आभार ज्ञापन महिला मंडल मंत्री रीमा सिंघवी ने किया।

जीवन निर्माण की कला विषयक कार्यशाला का आयोजन

राजसमंद।

मुनि प्रसन्न कुमार जी एवं मुनि मोक्ष कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप द्वारा भिक्षु निलयम परिसर में जीवन निर्माण की कला विषयक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम समन्वयक राजकुमार दक एवं तेयुप मंत्री अंकित परमार ने बताया कि पूर्व उप-शासन सविच विधि न्यायाधीश डॉ० बसंतीलाल बाबेल के मुख्य अतिथि भिक्षु बोधि स्थल अध्यक्ष ख्यालीलाल चपलोत की अध्यक्षता व तेयुप अध्यक्ष भूपेश धोका के विशिष्ट आतिथ्य में आयोजित समारोह में मुख्य वक्ता शासन सचिव पंचायती राज राजस्थान सरकार के नवीन जैन आईएएस थे, उन्होंने अपना वक्तव्य दिया।

मुनि प्रसन्न कुमार जी ने जीवन निर्माण कला पर गीतिका प्रस्तुत की। पूर्व न्यायाधीश डॉ० बंसीलाल बाबेल ने कहा कि युवा वर्ग शिक्षा के साथ संस्कारों को प्राथमिकता दें, बुजुर्ग परिजनों के प्रति जिम्मेदारी निभाने के साथ सामाजिक उत्थान में सहभागी बनें।

ज्योत्सना पोखरना ने अणुव्रत गीत प्रस्तुत किया। आभार मंत्री अंकित परमार ने ज्ञापित किया। कार्यक्रम में अनेक पदाधिकारीगण, सदस्य अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 - 25 सितंबर, 2022

✦ *दया पापों से बचाने वाला रक्षाकवच होता है। वह संसार समुद्र से पार पहुँचाने वाली नौका है।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

अनासक्ति की चेतना के विकास करने का महापर्व है - पर्युषण

जाटाबास।

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन के प्रांगण में पर्युषण महापर्व के आठ दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन संपन्न हुआ। पर्युषण महापर्व का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ।

खाद्य संयम दिवस : इस अवसर पर शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि पर्युषण पर्व महान व अलौकिक पर्व है। यह बाहर से भीतर आने का पर्व, वासना से उपासना की ओर, आसक्ति से अनासक्ति की चेतना के विकास करने का पर्व है। जैन धर्म में इस महापर्व का विशेष महत्त्व है। भोजन हमारे जीवन निर्माण का पहला तत्त्व है। यह हमारे व्यक्तित्व का घटक है। वृत्तियों का निर्माता है। विकास का पहला द्वार है। भोजन का उद्देश्य आत्महित होना चाहिए।

साध्वी कंचनरेखा जी ने खाद्य संयम पर विचारों की प्रस्तुति दी। साध्वीवृंद ने गीतिका का संगान कर जयाचार्य निर्वाण दिवस पर अपनी भावांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन सुमंगलाश्री जी ने किया।

स्वाध्याय दिवस : पर्युषण महापर्व का दूसरा दिवस 'स्वाध्याय दिवस' पर साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि आत्मा के विषय में अनुप्रेक्षा, चिंतन-मनन करना स्वाध्याय है। मर्यादापूर्वक अध्ययन करना स्वाध्याय है। स्वाध्याय से ज्ञान का विकास होता है, नए-नए रत्न प्राप्त होते हैं। स्वाध्याय से जहाँ ज्ञानावरणीय कर्म क्षीण होता है वहीं मानसिक संबल प्राप्त होता है।

साध्वीश्री जी ने स्वाध्याय के पाँच प्रकारों का विवेचन करते हुए प्रतिदिन स्वाध्याय करने की प्रेरणा उपस्थित जनसमुदाय को दी।

साध्वी सुलभयशा जी ने कहा कि स्वाध्याय अंधकार से प्रकाश की ओर प्रस्थान करता है। स्वाध्याय से भीतर का कचरा निकलता है और आत्मदर्शन का मार्ग प्रशस्त होता है।

सामायिक दिवस : सामायिक दिवस पर तेयुप के तत्त्वावधान में अभिनव सामायिक के अवसर पर शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि भगवान महावीर से पूछा गया–भंते! सामायिक क्या है? सामायिक का अर्थ क्या है? तो भगवान ने कहा–सामायिक का अर्थ है–समता की साधना, आत्मा में रहना।

सामायिक से भाव शुद्धि, चित्त समाधि, कषाय की मंदता, मन की एकाग्रता, तनाव मुक्ति, इंद्रियाँ अंतर्मुखी एवं कर्मजा शक्ति का विकास होता है।

तेयुप के तत्त्वावधान में समायोजित अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया। साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने सामायिक विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम का संचालन तेयुप अध्यक्ष मितेश जैन ने किया। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री विनोद सुराणा ने किया।

वाणी संयम दिवस : इस अवसर पर शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि भगवान महावीर से पूछा गया–भंते! वाणी संयम से क्या प्राप्त होता है। भगवान ने कहा–वाणी संयम से निर्विचारिता प्राप्त होती है, जिससे व्यक्ति अंतर्मुखी बनता है और उसके भीतर की शक्ति जाग्रत होती है। साध्वीश्री जी ने गीतिका का संगान किया।

साध्वी संबोधयशा जी ने 'वाणी संयम दिवस' पर विचार व्यक्त किए। मंगलाचरण साध्वी सुलभयशा जी एवं साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने सुमधुर गीत के संगान से किया। संचालन साध्वी सुमंगलाश्री जी ने किया। अभिलाषा बांठिया ने गीतों का संगान कर पूरी परिषद को भाव-विभोर कर दिया।

अणुव्रत चेतना दिवस : अणुव्रत दिवस पर साध्वीश्री जी ने अणुव्रत का अर्थ बताते हुए कहा कि चरित्र विकास के लिए किए जाने वाले संकल्प का नाम अणुव्रत है। 'अणु' अर्थात् छोटे और व्रत' अर्थात नियम। छोटे-छोटे नियमों से व्यक्ति संयम के पथ पर अग्रसर हो सकता है। साध्वीश्री जी ने उपस्थित जनमेदिनी को अणुव्रतों के संकल्पों को स्वीकार करने की प्रेरणा दी। साध्वी सुमंगलाश्री जी ने भगवान ऋषभ के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए अपने विचार व्यक्त किए। साध्वीवृंद ने गीत से मंगलाचरण किया।

जप दिवस : जप दिवस पर साध्वीश्री जी ने कहा कि पर्युषण पर्व पुरुषार्थ का प्रतीक है। धर्म करने में पुरुषार्थ चाहिए। भोगों पर त्याग का अंकुश लगाकर अधिकाधिक समय पर्युषण के दौरान धर्माराधना में लगाना चाहिए। जप साधना मार्ग का एक सोपान है। जप से ज्ञान, दर्शन व चरित्र की प्राप्ति होती है। साध्वी सुमंगलाश्री जी ने भगवान पार्श्वनाथ के पूर्व भवों का विवेचन किया।

मंगलाचरण साध्वीवृंद ने गीतिका से किया।

ध्यान दिवस : साध्वीश्री जी ने कहा कि एक आलंबन पर चित्त को एकाग्र करना ध्यान है। आत्मा को आत्मा के द्वारा देखना ध्यान है। मानसिक एकाग्रता का आलंबन ध्यान है। ध्येय व ध्यान का एकाकार होना ही ध्यान की पराकाष्ठा है। ध्यान के चार प्रकारों का विवेचन करते हुए साध्वीश्री ने कहा कि प्रथम दो ध्यान से जीव सद्गति को प्राप्त करता है और अप्रशस्त ध्यान से दुर्गति प्राप्त होती है। हमें सदैव प्रशस्त ध्यान में रहना चाहिए।

कार्यक्रम का संचालन तरुण समदड़िया ने किया।

संवत्सरी महापर्व : संवत्सरी महापर्व के अवसर पर साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि पर्वाधिराज पर्युषण सभी पर्वों में सर्वोत्तम पर्व है। संवत्सरी का दिन श्लाका का दिन है। जैन इतिहास के अनुसार यह अहिंसा की प्रतिष्ठा का दिन है। यह अध्यात्म का शिरोमणी पर्व है। आध्यात्मिक विकास का पर्व है। मैत्री की पावन गंगा का अवतरण है। विगत वर्ष के पर्यालोचन के साथ आत्म-निरीक्षण का पर्व है। साध्वीश्री जी ने संवत्सरी पर्व का विशद् विवेचन करते हुए भगवान महावीर के जीवन-वृत्त को प्रस्तुत किया।

साध्वी कंचनरेखा जी ने भगवान महावीर के जन्म से लेकर दीक्षा के पूर्व तक के जीवन चरित्र का वाचन किया। साध्वी सुलभयशा जी ने भगवान महावीर की साधना का वर्णन किया। मंगलाचरण तेयुप अध्यक्ष मितेश जैन एवं उनकी पूरी टीम ने किया।

क्षमायाचना दिवस : क्षमापना दिवस पर शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि क्षमा वीरों का भूषण है। कायर व्यक्ति क्षमा की गरिमा से मंडित नहीं हो सकते। क्षमा वही कर सकता है जिसका हृदय विशाल हो, जिसमें सहज सरलता हो। क्षमा वीरत्व की अलंकृत है। मानव गलतियों का पुतला है। चाहे-अनचाहे, ज्ञात-अज्ञात में त्रुटियाँ हो जाती हैं, उसके प्रतिकार के लिए हमारे ऋषि-महार्षियों ने अनुपम अवदान दिया–खमतखामणा। यह शब्द गरिमापूर्ण है। परस्पर मन-मुटाव, आदि दुष्प्रवृत्तियों के शोधन के लिए यह एक अनुपम रसायन व औषधि है। साध्वीश्री जी ने सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों, समस्त श्रावक-श्राविका समाज व अन्य सभी बंधुओं से अंतःकरण से खमतखामणा किया। साध्वीवृंद ने भावपूर्ण अभिव्यक्ति के साथ खमतखामणा किया। श्रावक समाज ने सभी साध्वीवृंद से सामूहिक रूप से खमतखामणा किया।

सभाध्यक्ष पन्नालाल कागोत, तेयुप अध्यक्ष मितेश जैन, महिला मंडल की कार्यकारिणी सदस्य मंजु सुराणा आदि अनेकानेक महानुभावों ने खमतखामणा की भावनाएँ प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन तेयुप अध्यक्ष मितेश जैन ने किया।

मेवाड़ स्तरीय आंचलिक कार्यशाला का आयोजन

आमेट।

अभातेममं के तत्त्वावधान में महिला मंडल द्वारा साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में मेवाड़ स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। तेरापंथ भवन में कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई। तेरापंथ सभा अध्यक्ष देवेंद्र मेहता ने शुभकामनाएँ प्रेषित की।

तेममं अध्यक्ष मीना गेलड़ा ने सभी का स्वागत-अभिनंदन किया।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने कहा कि सफलता की चाबी है–जागरूकता। जागरूकता किस दिशा में हो? जागरूकता हो दायित्व के बोध में, सकारात्मक चिंतन में एवं सौहार्द के विस्तार में। हम सब जागरूक रहें दायित्व के बोध में, सकारात्मक चिंतन में और सौहार्द के विस्तार में हम सतत जागरूक रहें।

अभातेममं राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने बताया कि हम किस तरह स्वयं का प्रकाश, हम स्वयं बन सकते हैं। स्वयं का प्रकाश बनने के लिए आवश्यक है हम स्वयं का निरीक्षण करें। आत्मनिरीक्षण के लिए महत्त्वपूर्ण चार बिंदु बताए।

राष्ट्रीय महामंत्री मधु देरासरिया ने पधारे सभी मंडल की सार-संभाल करते हुए सभी क्षेत्रों के मंडल अध्यक्षों को आगामी कार्यों के लिए दिशा-निर्देश दिए। राष्ट्रीय सहमंत्री नीतू ओस्तवाल ने कहा कि संगठन में शक्ति है। इस विषय को विस्तार से समझाते हुए अपने आपसी सौहार्द से संगठन को मजबूत बनाने की बात कही। मेवाड़ क्षेत्रीय प्रभारी नीना कावड़िया ने मेवाड़ अंचल के सभी क्षेत्रों का परिचय प्रस्तुत किया।

राजसमंद विधायक दीप्ति माहेश्वरी ने कहा कि बहनों को सतत विकास के लिए अपनी शक्ति और कमजोरी को देखना चाहिए। उन्होंने बताया कि मेरी शक्ति है, मेरा परिवार और मेरी कमजोरी है, पद पर होने के कारण अपने परिवार को पूरा समय नहीं दे पाना।

आभार ज्ञापन सुधा मेहता और मधु बोहरा ने किया। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री संगीता पामेचा व उपाध्यक्ष मनीषा छाजेड़ ने किया। कार्यक्रम में मेवाड़ की ३० क्षेत्रों की बहनों ने अपनी सहभागिता दर्ज की।

पचरंगी तप अनुष्ठान

भीलवाड़ा।

डॉ० साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में 'पचरंगी तप अनुष्ठान' कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस आध्यात्मिक अवसर पर डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि कि पचरंगी तप का ये नयनाभिराम दृश्य सबको आकर्षित करने वाला है। तप वही कर सकता है जिसको अपने आराध्य से शक्ति मिलती है। आत्मविश्वास, दृढ़-संकल्प, साहस और मजबूत मनोबल जिसके पास होता है वही इस पथ पर अग्रसर होता है। तप वो आध्यात्मिक ज्योति है जो अंतर मन को प्रज्ज्वलित करके जीवन को निखार देती है। साध्वी विनम्रयशा जी ने तप के लिए सबको प्रेरित किया। साध्वीवृंद ने सामूहिक सुमधुर गीतिका का संगान किया। उपासक सुरेश बोरदिया ने तप पर अपने विचार व्यक्त किए। सभी तपस्वियों के प्रति साध्वीवृंद ने अनुमोदना प्रकट की।

रक्षाबंधन कार्यशाला के आयोजन

भीलवाड़ा

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन मुनि पारसकुमार जी एवं मुनि शांतिप्रिय जी के सान्निध्य में प्रज्ञा भारती, महावीर कॉलोनी में किया गया। कार्यशाला में मुनिश्री ने रक्षा का अर्थ बताते हुए कहा कि बहन राखी बांधती है भाई के और भाई उसकी रक्षा के लिए किसी भी परिस्थिति में तैयार रहता है। भाई को मन, वचन से बहन की रक्षा करनी चाहिए।

संस्कारक सुरेश बोरदिया एवं निर्मल सुतरिया ने लगभग ८० भाई-बहिनों को जैन संस्कार विधि के माध्यम से रक्षाबंधन पर्व मनाने का प्रशिक्षण दिया। कार्यशाला के प्रायोजक शांतिलाल, विमल बुलिया को मोमेंटो भेंट कर सम्मानित किया। उपाध्यक्ष प्रदीप आंचलिया ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में अच्छी संख्या में उपस्थिति रही।

कांदिवली

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में रक्षाबंधन कार्यशाला परिसंपन्न हुई। साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि राखी भारतीय संस्कृति का एक पवित्र त्योहार है, इसका अपना विशेष महत्त्व है। साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि सुसमाहित इंद्रियों के द्वारा हम अपनी रक्षा करें। इंद्रियों और मन की लगाम जब आत्मा के पास होगी, आत्मरक्षा हो जाएगी। साध्वीवृंद ने मधुर गीत का संगान किया।

सौरभ दुधेड़िया, पारसमल दुगड़, तोलाराम छाजेड़ ने मंत्रोच्चार आदि विधि की। इस अवसर पर तेरापंथी सभा मुंबई के वरिष्ठ उपाध्यक्ष कुमुद कच्छारा, चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के महामंत्री सुरेंद्र कोठारी, अभातेयुप सहमंत्री भूपेश कोठारी आदि ने अपने भाव व्यक्त किए। कांदिवली संयोजिका नीतू नाहटा ने आभार व्यक्त किया।

साहुकारपेट

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन का डेमो बताया गया।

साध्वीवृंद ने नमस्कार महामंत्र के सामुहिक स्मरण के साथ कार्यक्रम शुभारंभ हुआ। तेयुप अध्यक्ष विकास कोठारी, प्रबंधन मंडल और संस्कारकों के साथ मंगलभावना पत्रक की स्थापना की। संस्कारक पदमचंद आंचलिया, स्वरूपचंद दांती, हनुमान सुकलेचा ने संपूर्ण मंत्रोच्चार के साथ रक्षाबंधन को जैन संस्कार विधि द्वारा कैसे मनाया जाए, डोमो द्वारा बताया।

संस्कारक संतोष सेठिया ने संचालन और तेयुप मंत्री संदीप मूथा ने आभार प्रकट किया। इस अवसर पर संघीय संस्थाओं के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

राजराजेश्वरी नगर

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन किया गया। संस्कारक दिनेश मरोठी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला का शुभारंभ किया।

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी ने कहा कि हमें अपने संस्कारों को नहीं भूलना चाहिए और बच्चों को बचपन में ही जैन संस्कार सिखाने चाहिए। साध्वी अमितरेखा जी ने भाई-बहन पर आधारित कहानी सुनाई। साध्वी रत्नप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका की प्रस्तुति दी। तेयुप अध्यक्ष कौशलमल लोढ़ा ने सभी का स्वागत किया। साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष छत्रसिंह सेठिया ने कार्यशाला की प्रशंसा की। इस अवसर पर तेरापंथ ट्रस्ट, तेरापंथ सभा, तेमम, तेयुप पदाधिकारीगण एवं सदस्यों, तेरापंथ किशोर मंडल, कन्या मंडल एवं श्रावक समाज की उपस्थिति रही। कार्यशाला का संचालन एवं आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री विपुल पितलिया ने किया।

भुज

रक्षाबंधन को जैन संस्कार विधि के माध्यम से सामूहिक रूप से मनाया गया। मुनि पुलकित कुमार जी ने मंगलपाठ सुनाकर एवं इस पवित्र संबंध में सौहार्द, अपनत्व बना रहे यह प्रेरणा प्रदान की।

जैन संस्कारक प्रभुलालभाई मेहता, नरेंद्रभाई मेहता, भरतभाई बाबरिया ने सामूहिक जैन संस्कार विधि करवाई।

सभाध्यक्ष वाडीलाल मेहता, महासभा प्रतिनिधि शांतिलाल जैन, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष नरेंद्र मेहता, महिला मंडल अध्यक्षा जयश्री बहन खन्दोल आदि अपनी टीम के साथ उपस्थिति रहीं। परिषद अध्यक्ष आशीष बाबरिया ने स्वागत एवं आभार ज्ञापन मंत्री महेश गांधी ने किया।

कार्यक्रम स्थल को सुसज्जित किया एवं बेस्ट ड्रेस प्रतियोगिता के विजेता को सम्मानित किया। जैन संस्कार विधि प्रभारी जिगर बाबरिया ने तेयुप संपूर्ण कार्यसमिति टीम के साथ रक्षाबंधन को सामूहिक रूप से पूर्ण करवाया।

नालासोपारा

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन किया गया। अभातेयुप मुख्य संस्कारक पारस बाफना ने रक्षाबंधन को जैन संस्कार विधि से मनाया।

तेयुप अध्यक्ष किशन कोठारी ने जैन संस्कार विधि का विस्तार से जानकारी दी। मंत्री दिनेश धाकड़ ने उपस्थित श्रावक समाज को रक्षाबंधन जैन संस्कार विधि से मनाने का पूरे समाज से आह्वान किया। तेयुप कोषाध्यक्ष मनोज सोलंकी व ऋषभ धाकड़ आदि की उपस्थिति रही।

अहमदाबाद

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र एवं मंगलाचरण संस्कार विकास पितलिया एवं दिनेश बागरेचा ने किया। नानालाल कोठारी ने जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन का महत्त्व बताया।

कार्यक्रम के पश्चात मुनि मुकुल कुमार जी ने रक्षाबंधर का महत्त्व समझाया एवं बताया कि रक्षाबंधन भाई-बहन के प्रेम का त्योहार है। रक्षाबंधन कार्यशाला के राष्ट्रीय संयोजक वीरेंद्र सालेचा ने अपने भाव व्यक्त किए।

तेयुप उपाध्यक्ष प्रदीप बागरेचा ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में तेयुप के उपाध्यक्ष कपिल पोखरना, सहमंत्री कुलदीप नवलखा सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं अन्यजन उपस्थित थे। कार्यशाला का संचालन तेयुप मंत्री दिलीप भंसाली ने किया।

तेरापंथ प्रीमियर लीग-२

भुज।

तेयुप द्वारा तेरापंथ प्रीमियर लीग-२ का आयोजन डॉ० मुनि पुलकित कुमार जी के सान्निध्य में हुआ। पहले ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप नाम १२-१२ खिलाड़ियों की ४ टीम बनाई गई। १०-१० ओवर में जैन धर्म, तेरापंथ हिस्टोरिकल प्लेसिस, जनरल नॉलेज, स्पोर्टस, राजनीति-बॉलीवुड जैसे विषयों पर सवाल के माध्यम से बोलिंग और जवाब के माध्यम से रन बटोरे गए।

फाइनल मैच ज्ञान और दर्शन के बीच खेला गया। जिसमें विजेता ज्ञान टीम के विधि मेहता, हस्ती मेहता, हितांसु गांधी मेहता, रमीला बहन शाह, परिन दोशी के जवाबों की बदौलत जीत गई। दर्शन टीम ने अमित मेहता, भारती बहन शाह, नेहा दोशी, जसवंती मेहता, मीत मेहता और कीर्ति सिंघवी के जवाबों की बेटिंग से १२५ रन का विशाल स्कोर हुआ। अंत में ज्ञान २ विकेट से पाँच गेंद बाकी थी तब विजेता रही।

तेयुप के आशीष बाबरिया, आदर्श सिंघवी ने संचालन किया।

पैंसठिया छंद अनुष्ठान का आयोजन

मंत्र साधना का प्रयोग ऊर्जा प्रदायक

माधावरम्

जैन तेरापंथ नगर में मुनि सुधाकर जी के सान्निध्य में पैंसठिया छंद अनुष्ठान का आयोजन किया गया।

अनुष्ठान करवाते हुए मुनि सुधाकर जी ने कहा कि पैंसठिया छंद में चौबीसों तीर्थंकरों की स्तुति है। तीर्थंकर प्रभु की आराधना स्तुति करने से हमारे कर्मों की निर्जरा होती है। हमारे जीवन में सुख, समृद्धि, यश व कीर्ति की प्राप्ति होती है। छंद के इतिहास के बारे में जानकारी दी।

मुनिश्री ने लगभग १३०० उपस्थिति अनुष्ठान साधकों को विशेष प्रेरणा देते हुए कहा कि पूर्ण आत्मविश्वास के साथ किया गया जप मनुष्य को लक्ष्य तक पहुँचा देता है।

मुनि नरेश कुमार जी ने नमस्कार महामंत्र स्तुति की। संयोजक रेखा मरलेचा ने मंगलाचरण किया। माधावरम् ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी धीसूलाल बोहरा ने स्वागत और भरत मरलेचा ने संचालन करते हुए आभार व्यक्त किया।

कांटाबाजी

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में पैंसठिया यंत्र महानुष्ठान का आयोजन तेमम द्वारा किया गया। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि हमारा जीवन अनेक प्रकार के प्रभावों से प्रभावित होता है। वातावरण का प्रभाव, ग्रह नक्षत्र का प्रभाव, कर्मों का, इन सब प्रभावों से अपने आपको सुरक्षित तभी रख सकते हैं, जब अपनी आंतरिक शक्ति मजबूत बने।

अपने आध्यात्मिक विकास अपनी सुरक्षा के लिए मंत्र एवं यंत्र का उपयोग किया जा सकता है। पैंसठिया यंत्र छंद बहुत प्रभावशाली, चमत्कारी है। हर समस्या का निवारण मंत्र-यंत्र की साधना से हो जाता है।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि जैन आगम में ज्ञान का भंडार भरा है। मंत्र शास्त्र, ध्यान की प्रक्रिया, ज्योतिष विज्ञान की जानकारी जैन शास्त्रों में सविस्तार से दी गई। मंत्र-यंत्र की आराधना करते हुए तप का योग मिल जाए तो वह साधना शीघ्र सिद्ध होती है। जिसकी चेतना भीतर से जुड़ जाती है, वह परम आनंद को प्राप्त करता है। १७५ साधकों ने इस अनुष्ठान की आराधना की। विषय प्रस्तुति मनीषा, मुकेश जैन एवं आभार ज्ञापन पिंकी विकास जैन ने किया।

राजाराजेश्वरी नगर

शासनश्री साध्वी शिवमाला जी के सान्निध्य में विशिष्ट मुहूर्त समय में कल्याणकारी पैंसठिया यंत्र का सविधि जपानुष्ठान का आयोजन किया गया।

साध्वीश्री जी ने कहा कि इस यंत्र में जिनशासन के २४ तीर्थंकरों की स्तुति की गई है। इसमें अंकों की संयोजना विशिष्ट तरीके से की गई है। जपानुष्ठान में अच्छी संख्या में श्रावक समाज उपस्थित रहा।

साध्वीश्री जी के निर्देशानुसार श्वेत पन्ने पर केसर से इस कल्याणकारी यंत्र को अंकित कर इसे अपनी अमूल्य निधि की तरह संजोने का संकल्प लिया। तेरापंथी सभा द्वारा सभी को पैंसठिया यंत्र के फोल्डर वितरित किए गए।

सरदारपुरा

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी सत्यवती जी के सान्निध्य में पैंसठिया छंद का विधिवत अनुष्ठान कराया गया।

साध्वीश्री जी ने कहा कि यह पैंसठिया छंद चौबीस तीर्थंकर पर आधारित विशेष मंत्र है, जिसके जप से चौबीस तीर्थंकरों का स्मरण किया जाता है। इसका जप आत्मविकास में योगभूत बनता है।

इस अवसर पर सुरेश जीरावला, मानमल चौधरी, केवलचंद चौपड़ा, भंवरलाल भंसाली, लुणकरण छाजेड़ सहित सभा, तेमम, तेयुप एवं अन्य गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति रही।

बही भक्ति की धारा

गंगाशहर।

मुनि शांतिकुमार जी के सान्निध्य में आचार्य तुलसी समाधि स्थल, नैतिकता के शक्तिपीठ पर आचार्य तुलसी की मासिक पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भव्य भक्ति संध्या 'तुलसी नाम प्यारा' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में ऋषि दुगड़ एवं रितु दक ने अपने गीतों से श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया।

मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। मुनिवृंद ने गीत का संगान किया। प्रतिष्ठान के अध्यक्ष महावीर रांका आदि पदाधिकारियों ने संगायकों का साहित्य आदि से सम्मान किया। हंसराज डागा ने स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का संचालन ममता रांका ने किया।

✦ *व्यक्ति नशे के दुष्परिणामों को समझ ले तो नशे की लत से छुटकारा मिल सकता है। गलत कार्यों में व्यक्ति धन का नियोजन क्यों करे?*

–आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

साउथ हावड़ा

अभातेयुप द्वारा निर्देशित रक्षाबंधन कार्यशाला तेयुप द्वारा सभा भवन में हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान से हुआ। अभातेयुप संस्कारक बजरंगलाल डागा, राकेश चोरड़िया, मनीष कुमार बैद ने जैन मंत्रोच्चार के द्वारा कार्यक्रम संपादित किया। उपाध्यक्ष हितेंद्र बैद ने पधारे हुए सभी का स्वागत किया।

संस्कारों ने उपस्थित लगभग ४० लोगों को मंत्र सुनाकर रक्षाबंधन कार्यक्रम को जैन संस्कार विधि से मनाने की प्रेरणा देते हुए कार्यशाला संपन्न करवाई। प्रबंध समिति के सदस्य, कार्यसमिति सदस्य, साधारण सदस्य, किशोर मंडल के सदस्य, वरिष्ठ सदस्य की उपस्थिति रही।

मंत्री गगनदीप बैद ने आभार ज्ञापन किया। संयोजक अजित दुगड़, ऋषभ बैद ने अपना श्रम नियोजन किया।

● तेयुप, साउथ हावड़ा द्वारा निःशुल्क बूस्टर डोज का आयोजन हावड़ा म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन के सहयोग से बोन बिहारी बोस रोड एवं शांतिनिकेतन अपार्टमेंट में हुआ। कैंप का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हुआ। परिषद के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने उपस्थित सभी का स्वागत किया।

कार्यक्रम में हावड़ा के समाजसेवी एवं पूर्व पार्षद शैलेश राय सहित कार्यसमिति सदस्य सुमित जैन, जितेंद्र सुराणा, करण गोलछा, अमित दुगड़ की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन संगठन मंत्री रोहित बैद ने किया।

भुज

मुनि डॉ० पुलकित कुमार जी के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशन में भुज द्वारा आत्मशक्ति संवर्धन जप अनुष्ठान का कार्यक्रम तेरापंथ भवन में रात्रिकालीन रखा गया।

इस अनुष्ठान में १७ लोगों ने जप के साथ सामायिक की। सुरेश सुराणा ने भिक्षु स्वामी की गीतिका के साथ अपने भाव व्यक्त किए। मुनिश्री ने भिक्षु स्वामी की गीतिका के साथ मंगलपाठ सुनाया। तेयुप संगठन मंत्री आदर्श संघवी ने जप अनुष्ठान की जानकारी दी।

कांटाबाजी

मुनि प्रशांत कुमार जी एवं मुनि कुमुद कुमार जी के प्रयास से तेयुप द्वारा सामूहिक एकासन तप साधना के साथ मंत्र अनुष्ठान का आयोजन हुआ। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि आध्यात्मिक जीवन में कर्म बंध एवं निर्जरा का क्रम चलता है। कर्मों को दूर करने के लिए विभिन्न प्रकार से साधना करनी चाहिए। आध्यात्मिकता से कर्म की निर्जरा होती है। जप, ध्यान एवं तपस्या से कई कर्म दूर होते हैं।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि शरीर बल, बुद्धिबल से अधिक महत्त्वपूर्ण है–आत्मबल। आत्मबल जागृत होता है जप एवं तप के द्वारा। मीडिया प्रभारी अविनाश जैन ने बताया कि २५० साधकों ने मंत्र, अनुष्ठान एवं एकासन की साधना की।

उपाध्यक्ष दीपक जैन ने विचार प्रस्तुत किए। एकासन एवं मंत्र अनुष्ठान ऋषभ जैन एवं बिमल जैन के संयोजन में आयोजित हुआ। तेयुप अध्यक्ष अंकित जैन ने सभी का आभार व्यक्त किया।

मदुरै

स्थानीय तेरापंथ भवन में तेयुप एवं अरबन प्राइमरी हेल्थ सेंटर के संयुक्त तत्त्वावधान में कोरोना बूस्टर डोज कैंप का आयोजन किया गया। तेयुप के पदाधिकारीगणों द्वारा अरबन प्राइमरी हेल्थ सेंटर के द्वारा दी गई सेवाओं के लिए डॉ० टीम का सम्मान किया गया। तेयुप अध्यक्ष जितेंद्र चोपड़ा, निवर्तमान अध्यक्ष संदीप बोकड़िया सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

मास्टर विवान कोठारी ने टेक्नोलॉजी की व्यवस्था में सहयोग दिया। कार्यक्रम के संयोजक अभिषेक कोठारी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

अमराईवाड़ी

तेयुप द्वारा पब्लिक स्पीकिंग कार्यक्रम का पाँचवाँ सेशन सिंघवी भवन में आयोजित हुआ। जिसमें पब्लिक स्पीकिंग ग्रुप के ५ टीमों ने भाग लिया। अलग-अलग ग्रुप द्वारा अलग-अलग प्रस्तुतियाँ दी। ग्रुप एक्टिविटी के द्वारा टीमवर्क के बारे में समझाया। प्रोविजनल ट्रेनर आकाश शाह एवं सुरभि शाह ने सभी को मोटिवेट करते हुए पाँचवाँ सेशन समाप्त किया एवं सभी का आभार ज्ञापन किया।

तेयुप के अध्यक्ष हेमंत पगारिया ने, सभा अध्यक्ष रमेश पगारिया, कार्यक्रम के संयोजक मुकेश सिंघवी ने अपने भाव व्यक्त किए। आभार ज्ञापन मंत्री हितेश चपलोत ने किया।

असली आजादी अपनाओ विषयक संगोष्ठी का आयोजन

आमेट।

तेरापंथ भवन में अणुविभा के निर्देशन में आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में 'असली आजादी अपनाओ' विषय पर अणुव्रत समिति द्वारा साध्वी प्रांजलप्रभा जी के सान्निध्य में संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने कहा कि अणुव्रत भीतर का सुख और शांति प्राप्ति करने का एक साधन है। अणुव्रत के संकल्पों से कई समस्याएँ स्वतः ही खत्म हो जाती हैं।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता संचय जैन ने कहा कि स्वाधीनता का अर्थ है स्वयं का शासन। व्यक्ति अपने मन पर नियंत्रण करे, इंद्रियों पर संयम रखे, नैतिकता, प्रामाणिकता, व्यसनमुक्ति व अहिंसक जीवनशैली के द्वारा अणुव्रत की परिकल्पना को साकार कर आदर्श नागरिक बनकर ही असली आजादी की कल्पना के सार्थक कर सकता है।

सभा और अणुव्रत समिति द्वारा आगंतुक अतिथियों का स्वागत व सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन रेणु छाजेड़ द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन मोतीलाल डांगी ने किया।

✦ *अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम व्यक्ति को गलत कार्यों से बचने की प्रेरणा देते हैं।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

मासखमण तप अभिनंदन के कार्यक्रम

इचलकरंजी

साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में महिला मंडल उपाध्यक्ष सपना बालड़ एवं विकास सुराणा के मासखमण तप प्रत्याख्यान एवं अनुमोदना का कार्यक्रम तेरापंथ भवन में परिसंन्न हुआ।

कार्यक्रम में साध्वीश्री जी ने कहा कि तप का जिनशासन में बहुत अधिक महत्त्व माना गया है। जिनका क्षयोपशम प्रबल होता है, वे ही शक्ति का जागरण कर तप के क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हैं। बहन सपना व भाई विकास का क्षयोपशम प्रबल है और मनोबल भी उच्च है। दोनों ही विनीत, सेवाभावी, संघनिष्ठ, जागरूक श्रावक-श्राविका हैं।

सपना बालड़ के तप पर साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के प्राप्त संदेश का वाचन रमेश बालड़, विकास सुराणा को प्राप्त संदेश का वाचन राजेश सुराणा ने किया। सभा द्वारा संपूर्ण समाज की तरफ से दोनों तपस्वियों को अभिनंदन पत्र भेंट किया गया।

सभा अध्यक्ष महेंद्र गिड़िया, मंत्री पुष्पराज संकलेचा, तेयुप अध्यक्ष महेश पटावरी, महिला मंडल अध्यक्ष जयश्री जोगड़ सहित अनेक जनों ने अभिनंदन किया।

दोनों ही तपस्वियों के पारिवारिकजनों ने विभिन्न माध्यमों से तप अनुमोदना की। साध्वीवृंद ने गीतिका प्रस्तुति की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी आस्थाश्री जी ने किया।

गांधीनगर

तेरापंथ भवन में मासखमण तप अभिनंदन का आयोजन मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में हुआ। मुनिश्री ने कहा कि मुक्ति के चार मार्गों में चौथा मार्ग है–तप। वह मनोहर वाटिका है, जिसमें रमण करने वाला व्यक्ति अपने जीवन को रमणीय बना देता है। तप वही कर सकता है, जिसमें दृढ़ इच्छाशक्ति और मनोबल मजबूत होता है।

सुमित्रा बाई गादिया और प्रकाश बाई गोलेच्छा मासखमण लेके आई हैं। ऐसे ही तप के मार्ग पर बढ़ते हुए जीवन में नव इतिहास रचाकर आत्मोद्धार करें।

मुनि भरत कुमार जी ने कहा कि तप जीवन को सुनहरा बनाकर आत्मा को पावन बनाता है। बाल संत जयदीप कुमार जी ने गीत का संगान किया। सुमित्रा बाई गादिया ने मासखमण तप के प्रत्याख्यान किए। तपस्वी प्रकाश बाई गोलेच्छा ने आयंबिल मासखमण तप के प्रत्याख्यान किए। परिवार की महिलाओं द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई।

सभा अध्यक्ष कमल सिंह दुगड़ ने अनुमोदना की। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी से प्राप्त संदेश का वाचन महिला मंडल अध्यक्षा स्वर्ण माला पोखरणा एवं सभा उपाध्यक्ष अरविंद सिंघी ने किया। सभा कोषाध्यक्ष कन्हैयालाल सिंघी ने तप अभिनंदन पत्र का वाचन किया। मंत्री गौतम मांडोत ने संचालन किया।

अमराईवाड़ी-ओढ़व

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा द्वारा तपस्वी भाई-बहनों का अभिनंदन समारोह कार्यक्रम रखा गया। शाहीबाग से मेवाड़ मंडल अध्यक्ष छितरमल मेहता द्वारा मासखमण तप एवं अनेक तपस्वियों द्वारा तपस्या से अमराईवाड़ी में कीर्तिमान स्थापित किया। सभी तपस्वियों का सभा द्वारा साहित्य से स्वागत किया गया।

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी ने कहा कि विघ्न-बाधाओं को दूर करने के लिए तप एक महामंत्र है। पाप और ताप से संतप्त आत्मा के लिए शीतल निर्जर है–तपस्या। साध्वी संवेगप्रभा जी ने कहा कि तप शब्द तत्काल पवित्र करने का वो तप है जो व्यक्ति को दिन-रात प्रकाशमान बनाता है। साध्वीवृंद ने शासनश्री सरस्वती जी द्वारा रचित गीत का सामूहिक संगान किया।

सभा अध्यक्ष रमेश पगारिया ने स्वागत अभिनंदन किया। महिला मंडल द्वारा तप अभिनंदन गीत का संगान हुआ। छितरमल मेहता ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन और आभार तेरापंथी सभा मंत्री गणपत हिरण द्वारा किया गया।

नव वधू सम्मेलन का आयोजन

जसोल।

पुराना ओसवाल भवन में शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में नववधू सम्मेलन का आयोजन किया गया। महिला मंडल मंत्री ममता मेहता ने बताया कि साध्वीश्री जी की ओर से एक रोचक प्रतियोगिता का आयोजन करवाया गया। कुल ६ सोलहिया करने वाली बहनें (नववधू) १६ दिन तक लगातार एकासन का तप करती हैं।

इस अवसर पर सभी बहनों ने शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी की प्रेरणा से भ्रूण हत्या न करने का संकल्प लिया। इसके साथ ही सभी बहनों को १४ नियमों की प्रेरणा दी गई।

इस अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष सोहनी देवी सालेचा, मंत्री ममता मेहता, संरक्षक पुष्पा देवी बुरड़ आदि अनेक पदाधिकारीगण एवं अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे।

✦ *अतीत से प्रेरणा ली जा सकती है और अनागत की योजना बनाई जा सकती है, किंतु वर्तमान मे अच्छा कार्य करने का प्रयास करना चाहिए।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 - 25 सितंबर, 2022

जीवन में लक्ष्य प्राप्ति के लिए आवश्यक है सम्यक् पुरुषार्थ : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, १२ सितंबर, २०२२

जन-जन के उद्धारक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में बताया गया है कि हमारी दुनिया में दो तत्त्व हैं—जीव और अजीव। प्रश्न है कि यह जीव है—इसका पता कैसे चले? जीव का लक्षण क्या है? लक्षण वह होता है जो दूसरों से पृथक कर दे।

लक्षण के साथ लक्षणाभास भी आता है। लक्षण जो बताया जाए वो दूसरों में नहीं होना चाहिए। तब वह लक्षण बन सकता है। जीव अपने उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषार्थ, पराक्रम से युक्त होता है, तब वह अपने आत्मभाव-आत्म प्रवृत्ति से अपने जीव भाव, मैं जीव हूँ इसको प्रकट कर सकता है, ये बात सही है क्या? उत्तर दिया गया—हाँ गौतम ये बात ठीक है कि मैं अपने उत्थान आदि से प्रकट करता हूँ।

जीव अपने आपमें अमूर्त होता है। चैतन्यमय होता है। संसारी जीव शरीरधारी भी होता है। सिद्ध अशरीरी होते हैं। शरीरधारी होने के कारण वो प्राणी हैं, उस रूप में वह मूर्त भी है। उसका चैतन्य अदृश्य रहता है। प्रश्न है कि कैसे जानें कि यह जीव है। जीव है, वह उपयोग लक्षण वाला होता है। जीव में बोधात्मक चेतना-ज्ञान, दर्शन होता है।

जीव में ज्ञानावरणीय व दर्शनावरणीय कर्म का कुछ न कुछ क्षयोपशम अवश्य होगा, इनका क्षयोपशम नहीं रहे तो जीव अजीवता को प्राप्त कर लेगा। सिद्ध है या संसारी कोई भी जीव है, उसमें उपयोग होता ही होता है। एकेंद्रिय जीवों में भी मति-श्रुत अज्ञान होता है। हम प्रवृत्ति से पहचान सकते हैं कि यह जीव है। उपयोग लक्षण एकमात्र जीव के सिवाय और किसी में भी नहीं होता है। चेतना की प्रवृत्ति उपयोग है।

अज्ञान के संदर्भ में दो बातें हैं। एक तो मति-श्रुत अज्ञान है एक दूसरा कि यह अज्ञानी आदमी है। एक अज्ञान ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम भाव होता है। ज्ञान का अभाव या नहीं होना भी अज्ञान होता है। यह ज्ञानावरणीय कर्म का औदयिक भाव है। अज्ञान है, उसमें भी पात्र भेद होता है। मिथ्यात्वी के पास जो ज्ञान है, वो ज्ञान होने पर भी अज्ञान कहलाता है। जीव कहीं भी चला जाए, उसमें उपयोग होता ही, होता है। उपयोग शून्य जीव नहीं हो सकता। वह अजीव होता है।

हम ध्यान दें कि हमारे पास जो ज्ञान-जानकारियाँ हैं, हम उनका उपयोग-प्रयोग करें। ज्ञान का विकास तो अलग-अलग होता है। ज्ञान का दुरुपयोग न हो। हम ज्ञान से समस्या को सुलझा सकते हैं। ज्ञान में तारतम्य हो सकता है। हम अपनी शक्ति का भी सदुपयोग करें। पुरुषार्थ और पराक्रम करें। आदमी सम्यक् पुरुषार्थ द्वारा जीवन में कुछ पा सकता है। हम सम्यक् पुरुषार्थ करते रहें।

कालूयशोविलास का सुंदर विवेचन करते हुए फरमाया कि पूज्य कालूगणी गंगाशहर में लगभग एक माह विराजते हैं। वहाँ से भीनासर पधारते हैं। शास्त्रार्थ-चर्चा की वहाँ अन्य संप्रदाय से बात चली। आग्रह के लिए चर्चा न हो। ज्ञान बढ़ाने के लिए चर्चा होनी चाहिए। मगन मुनि गुरुदेव की आज्ञा से अगले चातुर्मास प्रवेश की जगह

की गवेषणा करने जाते हैं। गुरुदेव भी बीकानेर चातुर्मास हेतु पधार जाते हैं। अनेक प्रकार के लोग होते हैं। दीक्षाएँ भी होती हैं।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि श्रावक की चद्दर को वही सुरक्षित रख सकता है, जो इंद्रिय-संयम जानता हो।

आत्मा को निर्मल बनाना ही साधना का...

(पृष्ठ १६ का शेष)

साधु देवगति का बंध करेगा तो वह वैमानिक देव ही बनेगा। श्रावकत्व में पंचम गुणस्थान में आयुष्य का बंध करेगा तो भी वैमानिक देव गति का ही करेगा। सम्यक्त्वी मनुष्य भी सम्यक्त्व अवस्था में आयुष्य का बंध करता है, तो वैमानिक देवगति का ही बंध करेगा। सम्यक्त्व अवस्था में भवनपति, वाण व्यमन्तर, ज्योतिष, नरक, तिर्यंच, स्त्रीवेद, नपक्षेक वेद इन सात चीजों में आयुष्य का बंध नहीं होता है। श्रावकत्व संयमासंयम अवस्था हो जाती है। ये दो संयम की बात हो गई।

बाल तपस्या और अकाम निर्जरा। बाल तपस्या यानी मिथ्यात्वी जीव हैं, वो तपस्या करके देवगति के आयुष्य का बंध कर सकता है। मिथ्यात्वी वैमानिक देव भी बन सकता है। एक अभव्य जीव जो कभी सम्यक्त्वी बनने वाला नहीं है, वह भी ऐसी कोई पुण्य की स्थिति बना लेता है कि नौ ग्रैवेयक तक उपपन्न हो सकता है।

मोक्ष की अभिलाषा से की जाने वाली निर्जरा सकाम निर्जरा होती है। बिना मोक्ष की कामना से की जाने वाली निर्जरा अकाम निर्जरा होती है। अकाम निर्जरा करने वाला भी देवगति के आयुष्य का बंध कर सकता है। इनके दो भाग करें तो संयम और तप हो जाते हैं। देवगति पाने के लिए साधना नहीं करनी चाहिए। साधना तो करें आत्मा को निर्मल बनाने के लिए। मोक्ष पाने के लिए दुर्गति में न जाना पड़े।

साधु या श्रावक की साधना कितनी निर्मल है, यह महत्त्वपूर्ण है। श्रावक त्याग-नियम ले, फिर उसको अच्छे से पालने का भी प्रयास करे। गलती हो जाए तो प्रायश्चित्त-आलोयणा ले लेनी चाहिए। दूसरे समझें न समझें, सरल भाव से आलोयणा ले लेनी चाहिए। संयमरूपी मकान में टूट-फूट हो गई है, तो प्रायश्चित्त के द्वारा रिपेयरिंग करा लें, ठीक हो जाएगा। दोष साथ में चले गए तो कठिनाई हो सकती है। निर्मलता हमारी रहे।

आज गुजरात विधानसभा की स्पीकर नीमा बेन आचार्य पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुँची। कच्छ के श्रावक भी काफी संख्या में पहुँचे हैं। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन, पथ-दर्शन फरमाया। साधुचर्या के बारे में जानकारी दी। सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति के महत्त्व को समझाया। राजनीति भी जनता की बड़ी सेवा है, उसमें शुद्धता रहे। धर्म से प्रभावित रहे। धर्म कोई भी माने, कर्म अच्छे होने चाहिए। २००२-२००३ के समय पुण्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के समय में हुए प्रसंगों को बताया। २०१३ में कच्छ यात्रा भी की थी।

नीमा बेन आचार्य ने तेरापंथ धर्मसंघ के साथ किए कार्यों को बताया। आचार्यप्रवर की अहिंसा यात्रा के बारे में बताया। कच्छ चातुर्मास के लिए अर्ज की। नीमा बेन आचार्य भुज से विधानसभा सदस्य हैं।

पूज्यप्रवर ने कच्छवासियों की अर्जी पर मर्जी करते हुए फरमाया। जब भी अनुकूलता होगी तब यथासंभवतया कच्छ-सौराष्ट्र में विस्तृत प्रवास करने का भाव है। पूज्यप्रवर ने निर्मल दुधोड़िया को अठाई तप का प्रत्याख्यान करवाया।

आज अणुव्रत विद्यार्थी सम्मेलन भी पूज्यप्रवर की सन्निधि में होने जा रहा है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि हमारे जीवन में आचार के साथ सम्यक्त्व भी हो। जीवन में सम्यक्त्व का बहुत महत्त्व है।

राग के समान दुख नहीं और त्याग के समान कोई सुख नहीं : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ११ अक्टूबर, २०२२

करुणावतार परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि जो सुख आदमी को भीतर से प्राप्त होता है, वह निर्मल सुख हो सकता है और स्थायी भी बन सकता है। दो प्रकार के सुख होते हैं। एक सुख भौतिक पदार्थजन्य अथवा परिस्थितिजन्य होता है वह अस्थायी होता है।

जो आत्मा से मिलने वाला सुख होता है, वह निर्मल होता है। आत्मिक-सुख स्थायी बन सकता है। एक भीतर से मिलने वाला सुख और दूसरा बाहर से मिलने वाला सुख होता है।

साधना और अध्यात्म से जो सुख मिलता है वह आंतरिक आध्यात्मिक सुख होता है। साधन वाला सुख अस्थायी और साधना से मिलने वाला सुख स्थायी होता है। संतोष को परम सुख बताया गया है। जहाँ चाह-कामना है वो दुःख की राह है। चाह मुक्ति दुःख मुक्ति होती है। ये दो प्रकार के सुख हो जाते हैं।

हम जितना-जितना बाह्य सुखों से विरक्त बनेंगे, भीतर की ओर आगे बढ़ेंगे, तो आंतरिक सुख प्राप्त हो सकता है। जैसे-जैसे हम उत्तम तत्त्व को प्राप्त करते हैं, हमारी ज्ञान-चेतना में उत्तम तत्त्व आता है, उत्तम जागरण होती है, वैसे-वैसे बाह्य विषय (शब्द, गंध, रूप आदि) से अरुचि हो जाती है। उत्तम तत्त्व की प्राप्ति होती है।

सुख और दुःख का कारण या बंध और मोक्ष का कारण मन ही होता है। विषयासक्त मन है, तो वह बंधकारक हैं। निर्विषय मन है, वह मोक्ष को दिलाने वाला होता है। बंधन असली सुख नहीं है, मुक्ति असली सुख है। हम ज्यों-ज्यों मुक्ति की ओर आगे बढ़ते हैं, असली सुख को प्राप्त करते जाते हैं।

एक मिट्टी का लड्डू है, एक मिठाई का लड्डू है। असली सुखों की प्राप्ति के लिए त्याग, संयम, वैराग्य अपेक्षित होती है। संतोष से सुख मिलता है। राग के समान दुःख नहीं है और त्याग के समान सुख नहीं है। त्याग-संयम का रास्ता है—मन पर विजय पाना। मन से आदमी सुखी या दुखी बन सकता है। मानसिक प्रमाद से दुःख बढ़ता है। जहाँ अप्रमाद है, वहाँ सुख है।

जैसे सूर्य के सामने सर्दी नहीं टिकती, वैसे मन के संयम के आगे दुःख चला जाता है। भौतिक सुख मृगमरीचिका है। जीवन में पदार्थों का त्याग व इच्छाओं का परिसीमन बढ़े। हमारा ध्यान गहनों-कपड़ों जैसी छोटी चीजों में न उलझे। हमने जीवन में क्या पाया? हमारे जीवन में त्याग-संयम बढ़े ये चीजें महत्त्वपूर्ण हैं। बाह्य दृष्टि वाला छोटी चीजों को महत्त्व देता है। आंतरिक दृष्टि वाले के सामने छोटी चीजों का महत्त्व नहीं। भीतर के गुणों के आभूषण पहनें।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ की कृति—'कैसे पाएँ मन पर विजय' जैविभा द्वारा पूज्यप्रवर को लोकार्पित की गई। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने भी इस पुस्तक के संदर्भ में अपनी अभिव्यक्ति दी।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि दसवेंआलियं सूत्र में कहा गया है कि सब जीव जीना चाहते हैं, कोई मरना नहीं चाहता। व्यक्ति सुखपूर्वक, जीना चाहता है। सबको दुःख अर्पित लगता है। जो मिला उसी में रहना वास्तविक सुख है। सुख के कई प्रकार हो सकते हैं। जब व्यक्ति मूलभूत आवश्यकताएँ प्राप्त कर लेता है, तो उसे सुख प्राप्त हो जाता है। एक व्यक्ति अंतर में सुख प्राप्त करता है, तो उसे अलौकिक सुख की प्राप्ति होती है।

मुनि दिनेश कुमार जी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए समझाया कि जो व्यक्ति चार गतियों से छुटकारा पाना चाहता है, तो उसे चारित्र स्वीकार करना होगा।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 - 25 सितंबर, 2022

✦ *आदमी का समय किसी को दुःख देने, डराने आदि में प्रयुक्त न हो। उसका समय दूसरों का कल्याण करने में नियोजित हो।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक महामना भिक्षु का २२०वाँ चरमोत्सव

भिक्षु स्वामी के ज्ञान से प्रेरणा लेकर ज्ञान का विकास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ८ सितंबर, २०२२

भाद्रव शुक्ला त्रयोदशी आचार्य भिक्षु का वार्षिक महाप्रयाण दिवस भिक्षु चरमोत्सव। आचार्य भिक्षु के परंपर पट्टधर वर्तमान के भिक्षु आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि दसवेंआलियं के श्लोकों में भिक्खु-भिक्खु शब्द आता रहता है। भिक्षु एक साधु का पर्यायवाची शब्द है, जो भिक्षाशील होता है।

यह भिक्खु नाम हमारे जैन श्वेतांबर तेरापंथ के प्रथम आचार्य का नाम भी भिक्षु के रूप में प्राप्त है। आज भाद्रव शुक्ला त्रयोदशी है। चातुर्मास का पूर्वार्द्ध संपन्न हो रहा है। आज का दिन आचार्य भिक्षु के जीवन का चरम दिन है। जिसका महाप्रयाण हो गया वह दिवस चरम दिवस हो जाता है।

आचार्य भिक्षु के जीवन को हम देखें, दृष्टिपात करें तो उनका जीवन विशिष्ट प्रतीत हो रहा है। मैं भगवान महावीर के जीवन को देखता हूँ। इधर आचार्य भिक्षु के जीवन को देखता हूँ। असमानता तो है ही, पर कुछ समानताएँ भी हैं। उनके जीवन संदर्भ के कुछ पहलू भगवान महावीर के जीवन प्रसंगों में दर्शन होता है। जैसे बाप-बेटे में समानता दिखती है, वैसे भगवान महावीर और आचार्य भिक्षु में भी समानता का दर्शन होता है।

भगवान महावीर तीर्थंकर थे तो आचार्य भिक्षु को हम तीर्थंकर के प्रतिनिधि कह सकते हैं। आचार्य भिक्षु का जीवन एक सामान्य आदमी के जीवन से हटकर था। लगता है, उन्होंने पिछले जन्मों में तपस्या, साधना, योग, आराधना ऐसा किया है।

उनके जीवन में संघर्ष भी आए, पर वे आगे बढ़ते गए। आचार्य भिक्षु ने दर्शन-सिद्धांत भी दिया है।

तेरापंथ को जानने के लिए तेरापंथ के दर्शन-सिद्धांत को जानना भी आवश्यक है। इतिहास व मर्यादा व्यवस्था भी जानना आवश्यक है। तेरापंथ के इतिहास को पढ़ने से अनेक प्रेरणादायक प्रसंग जान सकते हैं। आठ आचार्यों का तो इतिहास उपलब्ध है। आचार्यश्री तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के इतिहास का काम चल रहा है। शासन समुद्र का कार्य भी मुनि जम्बुकुमार जी, सरदारशहर कर रहे हैं।

तेरापंथ का सिद्धांत, तेरापंथ का दर्शन पुराने ग्रंथों से समझा जा सकता है। तेरापंथ के दर्शन का अध्ययन चारित्रात्माएँ करें। तेरापंथ की मर्यादा और व्यवस्था को भी जानने का प्रयास करें। मुनि कीर्ति भी तेरापंथ के नियम के जानकार हैं। इनको पढ़कर अध्ययन कर चारित्रात्माएँ तेरापंथ के प्रवक्ता बनें। साधु-साध्वियों को अध्ययन की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। ज्ञान का विकास होना चाहिए।

आचार्य भिक्षु के पास आगम की दृष्टि से कितना ज्ञान था। उनकी बौद्धिक क्षमता विशेष थी। वे बिना डिग्री के विद्वान थे। जयाचार्य तो आचार्य भिक्षु के ज्ञान की दृष्टि से उत्तराधिकारी से लग रहे हैं। जयाचार्य का अपना विशिष्ट ज्ञान वैभव विराट रूप लिए था। गुरुदेव तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ जी भी विभिन्न विषयों के वेत्ता थे।

मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी भी तेरापंथ दर्शन के प्रवक्ता थे। तेरापंथ के इतिहास का भी विशेष ज्ञान था। ज्ञान का विकास होना चाहिए। मुनि उदित कुमार जी का भी तेरापंथ दर्शन के बारे में अच्छा ज्ञान है। मुनि कुलदीप कुमार जी, मुनि जिनेश कुमार जी, मुनि मदनकुमार जी को भी तेरापंथ इतिहास का अच्छा ज्ञान है। हम भिक्षु स्वामी के ज्ञान से प्रेरणा लेकर ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ें, ज्ञान का विकास करें।

मुनि महेंद्र कुमार जी का ज्ञान का अच्छा विकास है। प्रखर उनका अध्ययन है। वे विभिन्न भाषाओं और विभिन्न विषयों के वेत्ता हैं। भिक्षु चरमोत्सव पर आचार्यप्रवर ने स्वरचित गीत 'प्रतिदिन ध्यायें, शुभ सुख पाएँ' का सुमधुर संगान किया।

पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। संघ गान से कार्यक्रम का समापन हुआ।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का जीवन सरसता का जीवन रहा है। उस सरसता के कारण ही वो लोगों के आकर्षण के केंद्र बने हुए थे। लोग उनमें मिलने के लिए लालायित रहते थे। लोग चर्चा करते थे। चर्चा में स्वामीजी की बुद्धि तीक्ष्ण थी। वे हर प्रश्न के अकाट्य उत्तर देते थे। स्वामी जी के साथ चर्चा करना बड़ा महँगा पड़ता था। वे हर बात को सरलता से समझाते थे।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने कहा कि जैन दर्शन में वही धर्म है, जिसमें आत्मा की विशुद्धि हो। हिंसा-परिग्रह धर्म नहीं है। ब्रह्मचर्य की साधना धर्म है। संसार के सभी कार्य बंध हैं। आचार्य भिक्षु ने कर्तव्य और धर्म की एक नई मीमांसा करके लोगों को एक नया पथदर्शन दिया। आचार्य भिक्षु का सिद्धांत था कि सत्य को सत्य समझो। तेरापंथ का सिद्धांत है कि बंधन को बंधन समझो, मुक्ति को मुक्ति समझो।

मुनिवृंद व साध्वीवृंद द्वारा समूह गीत एवं तेयुप छापर की सुमधुर प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आत्मा को निर्मल बनाना ही साधना का एकमात्र लक्ष्य हो : आचार्यश्री महाश्रमण

ताल छापर, ६ सितंबर, २०२२

अर्हम् वाणी के उद्गाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया कि भंते! देव कितने प्रकार के बतलाए गए हैं। कहा गया कि गौतम! देव चार प्रकार के प्रज्ञप्त हैं—भवनपति, वाण-व्यंतर, ज्योतिषक और वैमानिक।

जैसे हमारा मनुष्य जगत है, पशु जगत, पेड़-पौधे भी दिखाई देते हैं। मनुष्यों में अनेक प्रकार हैं। देश, जाति, भाषा, संप्रदाय के आधार पर भेद हो सकता है। कई धनाढ्य, मध्यम और गरीब भी हैं। देव जगत भी विराट है। संज्ञी मनुष्यों से देवता बहुत ज्यादा हैं। भवनपति देवों में असुर कुमार, नागकुमार आदि दस प्रकार हैं। उनके फिर भेद हो जाते हैं। इनके अपने इंद्र भी होते हैं। बाण-व्यंतर देवों में भूत, पिशाच, यक्ष, राक्षस, किन्नर आदि-आदि १६ प्रकार के देव होते हैं।

ज्योतिष्क देवों सूर्य, चंद्रमा, ग्रह, नक्षत्र और तारे पाँच प्रकार के देव होते हैं। वैमानिक देवों में कई बहुत उच्च कोटि के देव होते हैं। इनके दो मुख्य प्रकार कल्पोपन्न और कल्पातीत हैं। किल्विषिक देव भी हैं। दूसरे देवलोक तक तो देवियाँ भी होती हैं। दो देवलोक से ऊपर पुरुष ही पुरुष होते हैं। बारहवें देवलोक तक तो इंद्र की व्यवस्था होती है। नौवें तथा दसवें देवलोक का एक इंद्र है और ग्यारहवें-बारहवें का एक ही इंद्र है। ये कल्पोपन्न होते हैं।

बारह देवलोकों के बाद नौ ग्रैवेयक और पाँच अनुत्तर विमान हैं। वहाँ कोई इंद्र की व्यवस्था नहीं होती, सब देव अहमीन्द्र होते हैं। ये कल्पातीत देव होते हैं। इनका बहुत लंबा आयुष्य होता है। अनुत्तर देवों सर्वार्थ सिद्ध के देवों का आयुष्य तो तैंतीस सागरोपम का होता है। शेष चार में जघन्य ३१ सागरोपम उत्कृष्ट ३२ सागरोपम का आयुष्य होता है।

देव गति में उत्पन्न होने के कुछ कारण भी होते हैं। देवगति में उत्पन्न होने के चार कारण प्रसिद्ध हैं। सराग संयम का पालन करने वाला जैसे साधु। सातवें गुणस्थान के बाद आयुष्य का बंध तो होता ही नहीं है। तीसरे गुणस्थान में भी आयुष्य का बंध नहीं होता। सातवें गुणस्थान में सीधा आयुष्य का बंध नहीं होता है। छठे गुणस्थान में आयुष्य बंध प्रारंभ होता है और साधु सातवें गुणस्थान में उस समय चला जाए तो आयुष्य बंध हो जाता है।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

❑ अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स की प्रति डाक द्वारा निःशुल्क मँगवाने के लिए अपना नाम, पता, मोबाइल नंबर, ई-मेल आईडी इस नंबर 9480048066 पर व्हाट्सएप करें।
❑ तेरापंथ टाइम्स ऑनलाइन पढ़ने के लिए एवं पी0डी0एफ0 डाउनलोड करने के लिए www.terapanthtimes.com पर लॉग इन करें।
❑ तेरापंथ टाइम्स में संघीय समाचार प्रकाशन हेतु abtyptt@gmail.com पर मेल करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**